चतुर्थ अध्याय

जयप्रकाश कर्दम के काव्य में चित्रित दलित जीवन की समस्याएँ

चतुर्थ अध्याय

जयप्रकाश कर्दम के काव्य में चित्रित दलित जीवन की समस्याएँ

4.1 समस्या : स्वरूप तथा अर्थ :

आधुनिक युग में मानव प्रगति कर रहा है, लेकिन इस प्रगति के साथ-साथ वह अनेक जटिलताओं को जन्म दे रहा है। परिणामत: आज का मानव बहुत-सी समस्याओं में घिरा हुआ नजर आता है। मानव नए-नए खोज करके अपना जीवन सुखी बनाने का प्रयास कर रहा है, लेकिन इसकी सुखी जीवन की कल्पनाओं का कोई अंत नहीं है। वो अपनी कल्पनाओं को वास्तव में लाने के लिए जी-जान से मेहनत कर रहा है। कल्पनाओं को वास्तव रूप देते समय जो-जो बाधाएँ, रूकावटें उसके सामने उपस्थित होती है, वे ही समस्याएँ है।

समस्या इस छोटे से शब्द ने पूरे मानव जाति को बाँध कर रखा है। मानव जीवन का ऐसा एक भी हिस्सा नहीं है, जिसे समस्या ने न घिरा हो। मानव के सामने जो समस्या आती है, उसे सुलझाने के लिए वह दिन-रात मेहनत करता है। मानव की इन समस्याओं ने साहित्य को भी अपनी ओर आकृष्ट किया है। मनुष्य समस्या का समाधान खोजने का कार्य कर रहा है, लेकिन इसमें वह उलझकर समस्या का समाधान नहीं कर पा रहा हैं।

संस्कृत के 'सम' उपसर्ग तथा 'अस्' धातु के संयोग से 'समस्या' शब्द की व्युत्पत्ति हुई है। 'सम' का अर्थ है... 'एकत्र' तथा 'अस' का अर्थ है 'फेंकना' या 'रखना'।

4.1.1 समस्या का अर्थ :

हिंदी विश्वकोश के अनुसार :

"समसन उक्तस सेपण सम असव्यत्

1. किसी श्लोक या छंद आदि का वह अंतिम पद या टुकड़ा जो पूरा श्लोक या छंद बनाने के लिए तैयार करके दूसरों को दिया जाता है, जिसके आधारपर पूरा श्लोक या छंद बनाया जाता है।

   पर्याय - समासार्था, समास्यार्था, समाप्तार्थी

2. संघटन।

3. मिश्रण, मिलाने की क्रिया।

4. कठिन अवसर या प्रसंग।"[1]

मानक हिंदी शब्दकोश के अनुसार :

1. मिलने की क्रिया या भाव । मिलन।

2. मिश्रण या संघटन।

3. उलझनवाली ऐसी विचारणीय बात जिसका निराकरण सहज में न हो सकता हो। कठिन या बिकट प्रसंग (प्रॉब्लेम) ।

4. छंद, श्लोक आदि का ऐसा अंतिम चरण या पद जो काव्य रचना के कौशल की परीक्षा करने के लिए उस उद्देश्य से कविओं के सामने रखा जाता है कि वे उसके आधारपर अथवा उसके अनुरूप छंद या श्लोक प्रस्तुत करे।"[2]

भाषा शब्दकोश के अनुसार :

"कठिन या जटिल प्रश्न गुढ या गहन बात उलझन, कठिन प्रसंग, किसी पद्य का अंतिमांश जिसके आधारपर पूर्व पद्य रचा जाता है, संघटन, मिश्रण, मिलने का भाव या प्रक्रिया।"[3]

---

1. संपा. नगेंद्रनाथ वसू - हिंदी विश्वकोश - भाग - 23, पृ.508
2. संपा. रामचंद्र वर्मा - मानक हिंदी शब्दकोश - भाग - 25, पृ.283
3. डॉ. रामशंकर शुक्ल 'रसाल' - भाषा शब्दकोश - पृ. 1522

4.1.2 समस्या की परिभाषा :

'समस्या' की परिभाषा देते हुए इलाचंद जोशी का मानना है कि

'आकाश के असीम विस्तार में टिमटिमाते तारों की तरह समस्याएँ भी अनगिनत और अंसख्य हैं, उनकी यात्रा का कोई अंत नहीं।'

जैनेंद्रकुमार समस्या के संदर्भ में मानते है कि 'धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य, न्याय-अन्याय इनको मिटाया जाय, तो जीवन का अर्थ ही समाप्त हो जाएगा। द्वैत वेदनाओं में ये ही शक्ति का उदय होता है। जिसके पराक्रम और पुरुषार्थ फलित होता है। समस्या तक ही जीवन है। समस्या की वजह यत्न-प्रयत्न है। द्वैत रहित स्थिति यति है, जो द्वैत सहित स्थिति समस्या गति है, जीवन है।

उपरोक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट हो जाता है कि, 'समस्या' शब्द किसी पद या काव्य का वह अंश है जिसके सहारे पूर्ण पद की रचना की जा सकती है।

आज के युग में समस्या का स्वरुप परिवर्तित हो गया है। इसका अर्थ केवल कठिन वस्तु से लिया गया प्रतित होता है। पर इसके साथ किसी भी कठिन प्रश्न का उत्तर संभव एवं असंभव सभी प्रकार के व्यापार के माध्यम से दे देना भी लक्ष्य रहा है।

निष्कर्ष रूप में कहा जाता है कि समस्या आज एक कठिन उलझन बन गयी है। इसे मानव सुलझाने का प्रयास तो कर रहा है लेकिन इसमे और भी फंसता जा रहा है। मानव जीवन के विकास के साथ-साथ इसमें जटिलताएँ, कठिनाईयाँ, समस्याएँ बढ़ती जा रही है। आज के युग में मानव जीवन में समस्याएँ इतनी बढ़ गयी है कि इनके कारण जीवन एक स्वयं समस्या हो गया है।

4.2 जयप्रकाश कर्दम के काव्य में चित्रित दलित जीवन की समस्याएँ :

साहित्यकारों ने आजादी के पश्चात् अपना ध्यान सामान्य जन-जीवन की ओर आकृष्ट किया। साहित्यकारों ने सामान्य जनजीवन में स्थित समस्याओं को अपने

साहित्य में स्थान दिया। अपने साहित्य में उन्होंने सामान्य जन-जीवन जीनेवाले लोगों के धार्मिक,आर्थिक तथा राजनीतिक शोषण को उन्होंने साहित्य दवारा उजागर किया। समाज जीवन में जब विकास होता है वहीं विकास के साथ समस्याएँ भी निर्माण होती है। जब विकास को धारा प्रवाहित होती है, तब उसमें रुकावट के रूप में कोई शक्तियाँ कार्यरत बनती है, जो 'समस्या' का रूप लेती है। समस्याएँ तो मानवी विकास में बाधा बनकर आती है लेकिन इन समस्याओं को सुलझाते हुए ही मानव विकास की गती बढ़ती रहती है।

प्राचीन काल से लेकर आज तक दलित जीवन में विभिन्न समस्याएँ रही है, इसमें कई समस्याएँ हल हो चूकी है, तो कई ज्यों की त्यों बनी रही है। दलित जनजीवन अविकसित होने के कारण यहाँ यातायात साधनों का अभाव रहता है। जिससे उनका जीवन समस्याओं की 'जटिल गाथा' बनता है। डॉ.धुर्ये के मतानुसार "जनजातीय समस्याएँ कुछ ऐंसी है जो इन्हीं तक सीमित है, जैसे नई आदतें, भाषा अथवा स्थान परिवर्तित कृषि, दूसरी समस्याएँ ऐंसी हैं जो ब्रिटिश शासन की लगान पद्धति और विधि-विधान से संबंधित है। हमारे विचार से जनजातियों की समस्याएँ एक प्रकार की नहीं, बल्कि अनेक प्रकार की है।"[1]

मानव एक सामाजिक प्राणी है। मानव ने अपने जैविक तथा भौतिक आवश्यकताओं के पूर्ति के लिए समाज व्यवस्था का निर्माण किया। सामाजिक व्यवस्था में मनुष्य एक दूसरें पर अवलंबित रहता है। इसी कारण मानव अपना जीवन समूहों में रहकर बिताते है। भारतीय समाज व्यवस्था में मनुष्य के जन्म से लेकर अंत तक विधिपूर्वक संस्कार किये जाते है। वस्तुत: समाज का निर्माण मानव ने ही किया और जीवन अच्छी तरह से जीने के लिए उसमें कुछ नियम बनाये। लेकिन अज्ञानी, अनपढ़ लोगों ने सामाजिक पहलुओं पर जोर दिया। परिणामत: समाज में संस्कृति के विश्वास के

1. डॉ. श्यामसिंह शशि - हिमालय के खानाबदोष - पृ.14

बदले अंधविश्वास निर्माण हुआ। यहीं अंधविश्वास समाज में आज तक दिखाई देता है।

हिंदू धर्म में जन्म के आधार पर वर्ण-व्यवस्था निश्चित की गई है। परिणामत: समाज में चार वर्ण पड़ गये, जिसमें हल्के काम शूद्र वर्ण करता था, इसी कारण वह हीन वर्ण माना गया। समाज में निरंतर पीसा जानेवाला वर्ण अछूत समझा गया। इसके कारण अछूतों को सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक अधिकारों से वंचित रखा गया। जिससे जातीयता निर्माण हो गई। ग्रामीण भागों में जातीयता महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। यहाँ लोग एक दूसरे को जाति से पहचानते है। इस तरह दलित जीवन में समस्याओं का निर्माण हुआ।

जयप्रकाश कर्दम ने अपने कविता-संग्रह 'गूंगा नहीं था मैं' और 'तिनका-तिनका आग' इन में दलित जीवन की समस्याओं पर प्रकाश डाला है। जातीयता, आर्थिक, शोषण, नारी समस्या, भूख आदि समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है, जिसका विस्तार से विवेचन यहाँ प्रस्तुत है -

4.2.1 जातीयता की समस्या :

प्राचीन काल में भारतीय समाज-व्यवस्था में जातीयता के बीज बोये है। आज तक भारतीय समाज व्यवस्था में जाति का महत्त्व रहा है। ग्रामीण भागों के लोग अपनी जाति-व्यवस्था को सुरक्षित रखना चाहते है, इसी कारण जातीय-भेदाभेद की समस्या का निर्माण हुआ। स्वतंत्रता की लड़ाई में लोग जात-पांत को भूलकर एक होकर अंग्रजों के विरूद्ध में लड़े थे। लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद वही भारतीय समाज जातीय भेदाभेद की समस्या से ग्रस्त हो गया। डॉ.देवेश ठाकुर जातीयता के बारे में कहते है - "एक और राष्ट्रीयता की भावना से प्रेरित भारतीय समाज एक स्वर में अंग्रेजी शासन के विरूद्ध उठ खड़ा हुआ था और दूसरी और स्वयं उसमें नगर ही नहीं ग्राम्य और आंचलिक स्तर पर भी जातिवाद का विषबीज विकास पा रहा था। जिससे व्यक्ति-व्यक्ति के बीच की खाई गहरी हो रही थी और व्यक्ति समाज जातिगत आधारपर अलग-अलग समूहों में विभाजित और विच्छिन्न होकर परस्पर द्वेष, ईर्ष्या

और शत्रुता के भाव को बढ़ाता हुआ राष्ट्रीय शक्ति एकता और उदात्त मानवीयता के आदर्शो को धूमिल कर रहा था।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि समाज जातीयता के कारण ही विभाजित हुआ है।

प्राचीन काल से लेकर आज तक भारतीय लोग अपने जाति और धर्म की रक्षा कर रहे है। हर एक जाति अपने आप को श्रेष्ठ मान रही है। परिणामत: जातीय भेदाभेद को जन्म दे रही है। समाज में हर एक व्यक्ति अपने जाति के प्रति एकनिष्ठ रहने की कोशिश करता है। अगर कोई व्यक्ति समाज के खिलाफ कोई वर्तन करे तो उसे बहिष्कृत किया जाता है। जातीयता मिटाने के लिए समाज में सुधार होना आवश्यक है। महात्मा फुले, राजर्षि शाहू महाराज, डॉ. अम्बेड़कर जैसे सुधारको ने जातीयता को हटाने के लिए प्रयास किये। जयप्रकाश कर्दम के कविता संग्रहों में जातीयता की समस्या का विस्तृत मात्रा में चित्रण हुआ है।

जयप्रकाश कर्दम ने अपने पहले कविता-संग्रह 'गूंगा नहीं था मैं' के 'वर्णवाद का पहाड़ा' कविता में जातीयता का चित्रण इस प्रकार किया

"तुम्हारे लोटे में
पानी भरने को भी
हम लालायित रहते
किन्तु तुमने पानी पीने के
अपने पीतल के लोटे को
हमारा हाथ कभी नहीं लगने दिया
लोटे में पानी सदैव
सवर्ण छात्रों से ही भरवाया।"[2]

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि बताता है कि वो गुरु का काम करना

---

1. डॉ. देवेश ठाकूर - मैला आंचल की रचना प्रक्रिया - पृ.68
2. डॉ. जयप्रकाश कर्दम - गूंगा नहीं था मैं - पृ. 21

चाहता है, लेकिन गुरू हमेशा उनसे दूसरे काम करवाते थे। गुरू हमेशा से पीने के पानी के लोटे को कभी भी अस्पृश्यों का हाथ लगने नहीं दिया। उन्होंने पीने का पानी केवल सवर्ण छात्रों द्वारा ही भरावाया। उपर्युक्त पंक्तियो में गुरू द्वारा भी जातीयता के दर्शन होते है।

जयप्रकाश कर्दम के 'वर्णवाद का पहाड़ा' में जातीयता के दर्शन होते है उसका चित्रण इसप्रकार -

"हमें पढ़ाया
प्रगति का रास्ता दिखाया
लेकिन समता के मार्ग पर तुम
खुद नही चल पाए
हमने रखा तुम्हें
वर्ण और जाति से ऊपर
पर तुम नहीं उठ पाए तुम अपनी
जातीय अहंमन्यता की संकीर्णता से।"[1]

इन पंक्तियों में कवि कहता है कि, उन्होंने गुरू को अपने जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया। गुरू ने ही हमें पढ़ाया और प्रगति का रास्ता दिखाया, लेकिन खुद गुरू ही समता के मार्ग पर नहीं चल सके। हमने आपको हमेशा वर्ण और जाति से भी ऊपर रखा।लेकिन आपकी जातीय मानसिकता नहीं बदल सकी।तुम कभी जातीयता के संकीर्ण मानसिकता से बाहर नहीं आ सके।तुमने हमेशा जाति को ही महत्त्व दिया।

जयप्रकाश कर्दम के 'बेमानी है आजादी' में भी जातीयता के दर्शन होते है -

"नहीं बैठ सकता जो आज भी
सवर्णों के सामने खाट पर
नहीं कर सकता मुंह उठाकर बात

1. डॉ. जयप्रकाश कर्दम - गूंगा नहीं था मैं - पृ. 21

साठ साल का बूढ़ा भी
दूध-मुंहे बच्चों तक को
मिमियाकर कहता है 'बाप'।"[1]

कवि कहता है कि, समाज में आज भी दलित समाज के लोग सवर्ण लोगों के सामने बैठ नहीं सकते। उनके साथ मुँह उठाकर बात नहीं कर सकते, साथ ही सवर्ण चाहे छोटा या बड़ा उसे दलित बुजूर्ग भी बाप कहते है। समाज में दलित को कोई स्थान नहीं होता। उपर्युक्त पंक्तियों में जातीयता के दर्शन होते है।

जयप्रकाश कर्दम के 'गूंगा नहीं था मैं' की 'अस्वीकृति' कविता में जातीयता का चित्रण इस प्रकार हुआ है -

"तेरे साथ शादी भी कर ले, लेकिन
जातीयता के
जहर के चलते
यह शादी भी
बेमानी ही रहेगी
उसके घर में तुझे
वह स्थान
कभी नहीं मिल जाएगा
जो किसी ब्राह्मणी को मिलता।"[2]

इन पंक्तियों में कवि नारी को कहता है, ब्राह्मण तुझसे शादी तो कर लेगा, लेकिन इस जातीयता के चलते यह शादी बेमानी ही रहेगी। इस शादी को कोई मंजूरी नहीं देगा। वह तुझे घर में भी लेकर जायेगा, लेकिन उस घर में तुझे वह स्थान कभी नहीं मिल पाएगा, जो स्थान एक ब्राह्मणी को मिलता। इस जातीयता में केवल तुझे

---

1. डॉ. जयप्रकाश कर्दम - गूंगा नहीं था मैं - पृ. 24
2. वही - पृ. 29

हीन ही माना जाएगा, तुझे घर में कोई स्थान नहीं मिल सकता क्योंकि तू शूद्र है। उपर्युक्त पंक्तियों में भी जातीयता का चित्रण हुआ है।

जयप्रकाश कर्दम के 'ओ नए साल' कविता में जातीयता का चित्रण इस प्रकार हुआ है -

"दलित नेता द्वारा अनावरण की गयी
किसी सवर्ण की प्रतिमा को
दूध और गंगाजल से धोकर
शुद्ध करने का
पाखण्ड न रचया जाए।"[1]

इन पंक्तियों में किसी दलित नेता द्वारा किसी सवर्ण की प्रतिमा का अनावरण किया गया हो, तो उस प्रतिमा को दूध और गंगाजल से धोकर शुद्ध किया जाता है। दलित ने अनावरण करने से वो प्रतिमा अपवित्र हो गयी, उसे दूध और गंगाजल से धोकर पवित्र किया जाता है। आज भी लोग जातीयता की मानसिकता से बाहर नही निकल सके हैं। इसका चित्रण इन पंक्तियों में हुआ हैं।

जयप्रकाश कर्दम का दूसरा काव्य-संग्रह 'तिनका-तिनका आग' में भी जातीयता का चित्रण हुआ है। इस कविता-संग्रह की 'भारत' इस कविता में जातीयता का चित्रण हुआ है -

"अपनी सत्ता साम्राज्य को
सुरक्षित रखने के लिए
मिटाएंगे वे मुझे ही
जिन्दा रखेंगे वे वर्ण और जाति
वर्ण भेद और सांप्रदायिकता।"[2]

---

1. डॉ. जयप्रकाश कर्दम - गूंगा नहीं था मैं - पृ. 63, 64
2. डॉ. जयप्रकाश कर्दम - तिनका-तिनका आग - पृ. 20, 21

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि कहता है, देश में अपनी सत्ता और साम्राज्य स्थापित करने के लिए वो लोग समाज में जातीयता को जिन्दा रखेंगे। इससे देश में इनका साम्राज्य स्थापित हो सकता है। वे अपने स्वार्थ के लिए साम्राज्य में वर्ग-भेद और सांप्रदायिकता का जहर फैलायेंगे, जिसके वो महान बने और समाज जाति और वर्ण के चक्रव्युह में फँसा जाए। वो लोग अपनी स्वार्थ की दुकान चलाने के लिए समाज में जाति को जिंदा रखना चाहते है।

जयप्रकाश कर्दम के 'बौने' कविता में जातीयता का चित्रण इस प्रकार किया है -

"मुझे कहा गया-अवर्ण
ताकि मैं
तुम्हारी वर्ण शुचिता का
सम्मान करता रहूँ
घोषित किया गया-अस्पृश्य
ताकि मैं तुम्हारे साथ
घुल-मिल ना सकूं
पुकारा गया मुझे हरिजन
ताकि सदैव
दीनता से दबा रहूँ।"[1]

उपर्युक्त पंक्तियो में कवि कहता है, मैं हमेशा तुम्हारी वर्ण-व्यवस्था का सम्मान करता रहूँ, तुम्हारा सम्मान करता रहूँ इसलिए मुझे अवर्ण कहा गया। मैं तुम्हारे साथ घुल-मिल न सकूँ, तुम्हारे साथ बैठ न सकूँ इसलिए मुझे अस्पृश्य कहा गया। मैं हमेशा तुम्हारे उपकारों पर दीनता के कारण दबा रहूँ, इसलिए मुझे हरिजन कहा गया। इन पंक्तियों में जातीयता का चित्रण स्पष्ट रूप में दिखाई देता है।

---

1. डॉ. जयप्रकाश कर्दम - तिनका-तिनका आग - पृ. 27

जयप्रकाश कर्दम की कविता 'भारतीय चिंतन की गाडी' में जातीयता का चित्रण इस प्रकार हुआ -

"लोकतंत्र की धुरी पर चलने वाली
भारतीय चिंतन की यह गाड़ी
इक्कीसवीं सदी में भी
जाति के स्टेशन से
बचकर निकलती है।"[1]

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि कहता है कि, हमारा देश लोकतंत्र है। स्वतंत्रता प्राप्त करके हमें साठ साल हो गये लेकिन हम जाति के संकीर्ण मानसिकता से बाहर नही निकल सके। आज भी हम जाति को ही महत्त्व देते हैं।

इक्कीसवीं सदी में हम वर्ण व्यवस्था, सांप्रदायिकता, जाति आदि को लेकर चले है। आज भी हर भारतीय चिंतन की गाड़ी जाति के स्टेशन के दूर से निकलती है। 'इस तरह जातीयता का चित्रण दिखाई देता है।

जयप्रकाश कर्दम के 'मैं बनारस जाऊँगा' कविता में जातीयता का चित्रण हुआ है।

"वहाँ ब्राह्मणवाद का गढ़ है
एक से बढ़कर एक सनातनी
कट्टर और क्रूर लोग मिलेंगे
जाति-भेद और छुआ-छूत में डूबे हुए
पानी को भी धो-धोकर पीने वाले।"[2]

इन पंक्तियों में कवि कहता है कि बनारस एक ब्राह्मणों का गढ़ माना जाता है। इसके एक से बढ़कर एक सनातनी रहते है, जो वर्ण-व्यवस्था को मानते है,

1. डॉ. जयप्रकाश कर्दम - तिनका-तिनका आग - पृ. 50
2. वही - पृ. 51

जो ब्राह्मणवाद को महत्त्व देते है। जो धर्म के प्रति कट्टर है।जो जाति को महत्त्व देते है। और जातीयता को वे मानते है, वो दलितों को हीन-मानते है। सनातनी लोग दलितों के स्पर्श को अपवित्र मानते है। वो दलितों से दूर ही रहते है। इन पंक्तियों में जातीयता का स्पष्ट चित्रण हुआ है।

4.2.2 बाढ़ की समस्या :

बाढ़ की समस्या एक प्राकृतिक समस्या है। मानव जीवन में कुछ समस्याएँ मानव निर्मित होती है, तो कुछ समस्याएँ प्राकृतिक होती है। मानव निर्मित समस्याओं से प्राकृतिक समस्या भयावह होती है। इसमें बाढ़, भूचाल जैसी समस्या होती है। इन समस्याओं का सामना करना मनुष्य के लिए कठिन होता है। बाढ़ की समस्या का प्रभाव सबसे ज्यादा सामान्य आदमी पर पड़ता है। मानव को अनेक विपत्तियों का सामना करना पड़ता है। बाढ़ की वजह से गाँव के गाँव तबाह होते हैं। बाढ़ के कारण लोग अपने परिवार से बिछड़ जाते है तो कई लोगों की बाढ़ के कारण मृत्यु हो जाती है। बाढ़ में फसल वह जाती है, किसानों की खेती मे भी कुछ उगता नहीं, जिससे उनकी खेती बरबाद हो जाती है। जयप्रकाश कर्दम का कविता संग्रह 'तिनका-तिनका आग' में 'बांध' कविता में बाढ़ की समस्या का चित्रण मिलता है -

"नदी
तुम उफनती क्यों हो
अपनी सीमा में क्यों नहीं रहती
धीरे-धीरे क्यों नहीं बहती
क्यों बेघर करती हो
लोगों को
नष्ट करती हो उनकी फसले
ध्वस्त करते हो उनके मकान
बहा ले जाती हो उनके

मवेशियों तक को भी
अपने साथ
छोड जाती हो महामरियां
व्यापक विनाश के बाद।"[1]

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि नदी को कहता है नदी, तुम इतनी उफनती क्यों हो, तुम अपनी सीमा में क्यों नहीं बहती और धीरे-धीरे क्यों नहीं बहती। बाढ़ के कारण लोग बेघर हो जाते है। बाढ़ के कारण लोगों की फसलें खराब हो जाती है। बाढ़ में लोगों के मकान तक बह जाते है। बाढ़ की वजह से लोग बरबाद हो जाते है। लेकिन बाढ़ के बाद भी जब पानी कम हो जाता है, तब महामारी जैसे बीमारी लोगों को हो जाती है। इसमें कई लोग मर जाते है। बाढ़ के कारण विनाश हो जाता है। इस प्रकार बाढ़ की समस्या का चित्रण जयप्रकाश कर्दम ने अपने कविता-संग्रह में किया है।

4.2.3 अशिक्षा की समस्या :

मानवी जीवन के विकास में शिक्षा का महत्त्व अधिक है। आज के युग में शिक्षा को महत्त्व प्राप्त हुआ है। किंतु प्राचीन काल से दलितों को शिक्षा से वंचित रखा गया। दलित समाज अर्थ के अभाव और जातीयता के कारण शिक्षा से दूर ही है। अशिक्षा ही सभी समस्याओं की जड़ है। अशिक्षा के कारण दलित समाज का विकास नहीं हो पाया। दलित समाज के शिक्षा के लिए महात्मा फुले, कर्मवीर भाऊराव पाटील आदि ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। दलित समाज को शिक्षा के लिए डॉ.अम्बेड़कर जी ने प्रेरित किया।

दलित वर्ग में अज्ञान, अशिक्षा एक बड़ी समस्या के रूप में सामने आयी है। आज शिक्षा केंद्र राजनीति का अड़डा बन चूका है। इस बारे में आशा मेहता कहती है - "आज की शिक्षा संस्थाए घृणित राजनीति का आखाड़ा बन गई है।"[2] दलित वर्ग

---

1. डॉ.जयप्रकाश कर्दम - तिनका-तिनका आग - पृ.43
2. डॉ.आशा मेहता - स्वातंज्योत्तर हिंदी उपन्यासों में वैचारिकता - पृ.193

शिक्षा से दूर होने से वो भौतिक सुविधाओं से दूर है। इसलिए इनका विकास नही हो रहा है। शिक्षा के अभाव में कारण इनका शोषण हो रहा है। जयप्रकाश कर्दम ने अपने कविता-संग्रह में दलित समाज में व्याप्त शिक्षा समस्या का चित्रण मिलता है।

जयप्रकाश कर्दम ने अपनें कविता-संग्रह 'तिनका-तिनका आग' की 'अदालत' कविता में अशिक्षा की समस्या दिखाई देती है -

"लगवाकर अंगूठा कोरे कागज पर
हड़पते आए हो तुम
मेरे घर- जमीन
लूटते आए हो
मेरे गाय-भैंस तक।"[1]

दलित समाज अशिक्षित होने के कारण उसे किसी भी चीज की जरूरत हो तो वे उसका अंगुठा ले लेते लेकिन बाद में वो कोरे कागज पर उनकी घर-जमीन लिख लेते थे। वो अज्ञानी होने के कारण कुछ कर नहीं सकता। वो उनके कहने पे चलता, इसी कारण दलित लोगों के पास जो कुछ होता उसे हड़प किया जाता था। उनके अज्ञान का फायदा लेकर उन्हें बेघर तक किया जाता था। दलित समाज अशिक्षित होने के कारण उनके अज्ञान का फायदा लेकर कई लोग उन्हें लुटते हैं। इस प्रकार जयप्रकाश कर्दम ने अशिक्षा की समस्या का चित्रण किया है।

4.2.4 शोषण की समस्या :

भारतीय समाज व्यवस्था वर्ण-व्यवस्था पर आधारित है। इस वर्ण -व्यवस्था में उच्चवर्ग का हर एक व्यक्ति अपने हितो के लिए अपने से नीचले वर्ग का शोषण करता है। डॉ.श्रीराम गुंदेकर का कहना है - "दैववादी होनेवाले मुझे शोषण का बीज यहाँ के विषमता पर आधारित समाज-व्यवस्था में मुनाफाखोर उत्पादन व्यवस्था में,

---

1. डॉ.जयप्रकाश कर्दम - तिनका-तिनका आग - पृ.61

भ्रष्टाचारी शासन तथा प्रशासकीय व्यवस्था में दिखाई देता है।"[1] इस मंतव्य से स्पष्ट होता है कि विषमता के कारण ही शोषण होता आया है।

भारतीय समाज व्यवस्था में वर्ण-व्यवस्था एवं वर्ग व्यवस्था के कारण दलितों का शोषण हो रहा है। इस समाज व्यवस्था में सवर्ण समाज बल तथा छल से दलित वर्ग का शोषण करता है। नए-नए हथकंड़े आजमाकर दलितों का शोषण सवर्ण लोग कर रहे है। राजनीति का सहारा लेकर तथा पुलिस को अपना पक्षधर बनाकर उच्चवर्ग दलित-वर्ग पर अत्याचार करते है। शोषण की समस्या के बारे में डॉ. प्रभा बेनीपुरी कहती है - "जब तक मनुष्य मात्र के प्रति मनुष्य के हृदय में प्रेम का भाव अविर्भूत न हो मनुष्यता कैसे टिकेगी ? कहीं व्यक्ति, कहीं समाज और कहीं राष्ट्र एक दूसरें का शोषण ही करेंगे।"[2] इससे स्पष्ट होता है कि मनुष्य के मन में जब तक प्रेम नहीं रहेगा वे एक दूसरे का शोषण करते रहेंगे।

अज्ञान, एवं अंधश्रद्धा के कारण दलितों का जमींदार, सरकारी अफसर, धार्मिक व्यक्ति, महाजन, साहूकार आदि के द्वारा शोषण हो रहा है। जयप्रकाश कर्दम ने अपने कविता संग्रहों में शोषण की समस्याओं का यथार्थता से चित्रण किया है।

'गूंगा नहीं था मैं' इस कविता संग्रह के 'किले' इस कविता में कवि दलितों पर होनेवाला शोषण चित्रित करता है -

"मेरे श्रम और शोषण से
फले-फूले है
मेरे हिंसा और अपमान पर
खड़े है
असमानता और अन्याय के
सारे किले

---

1. डॉ. श्रीराम गुंदेकर - ग्रामीण साहित्य प्रेरणा आणि प्रयोजन - पृ. 59
2. डॉ. प्रभा बेनीपुरी - बेनीपुरीजी के नाटकों में सामाजिक चेतना - पृ.133

मेरी आंखो में गड़े हैं

इन किलो में बंद है

मेरी चीखें।"[1]

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने शोषण की समस्या को मुखर किया है। दलितों के श्रम, परिश्रम और शोषण क़े परिणाम स्वरूप विकास नहीं हो रहा है। दलितों की हिंसा और उनके अपमान की नींव पर ही विकास के शिखर खड़े है। सवर्णों की सामंती मानसिकता के कारण दलितों के साथ असमानता का व्यवहार एवं अन्यांय की परंपरा अबाध है। सामंती मनोवृति के स्मारक वे किले है जिनमें दलितों की चीखे बंद है और यही वजह है कि कवि इन किलों से तिरस्कार करता है। दलितों को विकास से दूर रखने के लिए इनका शोषण किया जाता है। ये उपर्युक्त पंक्तियों से स्पष्ट होता है।

'किले' कविता में जयप्रकाश कर्दम शोषण के समस्या के बारे में कहते है -

"इनके मेहराबों मे सजे हैं

मेरी यातनाओं के फानूस

मेरे रक्त में रंगे हैं

इनके ध्वज और,

इनकी दहलीजों में दफन है

मेरा वजूद।"[2]

कवि का मानना है कि किलों की सजावट दलितों की मजबूरों की यातनाओं पर आश्रित है। दलितों के खून से ही सामंती व्यवस्था की ध्वज पताका रंगी हुई है। इनकी दहलीजों में दलित एवं विवश शोषितों की अस्मिता, उनका वजूद दबा हुआ हैं। कवि को लगता है कि सामंती व्यवस्था ने उसकी पहचान ही मिटा दी है।

---

1. डॉ.जयप्रकाश कर्दम - गूंगा नहीं था मैं - पृ. 11
2. वही - पृ. 11

जयप्रकाश कर्दम अपनी कविता 'किले' में शोषण की समस्या का चित्रण इस प्रकार करते हैं -

"मेरे मुंह का ग्रास
नोचते आए हैं मुझे
भूखे बाज की मानिंद
अपने नुकीले पंजों से, और
उकारते आए हैं
मेरा मांस ।"[1]

कवि को लगता है कि आज दलितों का मुँह का निवाला अक्सर शोषण कर्ताओं के द्वारा छीना जा रहा है, उसे नोचने खसोटते रहे हैं। भूखे बाज के समान झपटते हुए अपने नुकीले पंजों से सवर्णो ने दलितोंपर हमलों पर हमले करते हुए उसे लहुलुहान कर दिया है। दलितों का खून चूसते हुए उसका मांस नोच कर उसे रक्तरंजीत बनाए शोषण की परंपरा को बरकरार किया है।

'तिनका तिनका आग' इस कविता संग्रह के 'अस्मिता' कविता में जयप्रकाश कर्दम ने शोषण की समस्या को उजागर किया है -

"मानव अधिकारों के पक्षधर
चिंतित हैं
मानव अधिकारों की रक्षा के लिए
सजग और सक्रिय हैं वे
मानव अधिकारों के उल्लंघन के खिलाफ
हत्या लगती हैं उन्हें
मानव-अधिकार की।"[2]

---

1. डॉ.जयप्रकाश कर्दम - गूंगा नहीं था मैं पृ. 14
2. डॉ.जयप्रकाश कर्दम - तिनका-तिनका आग पृ. 11

मानव के अधिकारों की रक्षा करने के लिए मानव अधिकार के पक्षधर अत्यंत चिंतित एवं सतर्क है तथा सक्रिय है। उनका मानना है कि हर हाल में मानव अधिकार की रक्षा हो लेकिन वे ही लोग अधिकार के खिलाफ है।दलितों का मानव अधिकार प्राप्त करना उन्हें सहन नहीं होता।वो हमेशा दलितों को मानव अधिकारों से वंचित रखना चाहते है।

'अस्मिता' कविता में शोषण का चित्रण जयप्रकाश कर्दम ने इस प्रकार किया है -

"मानव अधिकार के इस
हनन के खिलाफ
करोड़ो दलित वंचित हैं
सदियों से
बहुत सारे मानव-अधिकारों से।"[1]

मानव अधिकारों के अधिकार रक्षा से आज की करोड़ों दलित सदियों से वंचित है लेकिन इसकी फिक्र मानव अधिकारों को नहीं हैं। जिन्हें सदियों से अपने अधिकारों से दूर रखकर उनका शोषण किया गया। उनके अधिकारों का उन्हें पता तक चलने नहीं दिया।

जयप्रकाश कर्दम ने 'तिनका तिनका आग' कविता संग्रह के 'स्वाभिमान के पथ पर' इस कविता में दलितों का शोषण किस प्रकार किया जाता है इसपर प्रकाश डाला है -

"अन्याय और उत्पीड़न की
इस भट्टी में
तुमने हमें क्यों झोंका
घृणा और घुटन की
इसकी जिंदगी को लेकर।"[2]

---

1. डॉ.जयप्रकाश कर्दम - तिनका-तिनका आग - पृ.11
2. वही - पृ. 34

अन्याय एवं शोषण की भट्टी में दलितों को झोंक दिया है वह भी उनके साथ घृणा एवं घुटन का व्यवहार करते है। उनका कोई अस्तित्व नहीं है। वे केवल शोषित है, वे घृणा और घुटन की जिंदगी जी रहे है। सवर्णों के इस व्यवहार पर कवि ने यहां सीधा सवाल उपस्थित किया है।

जयप्रकाश कर्दम की कविता 'विहान' में शोषण का वर्णन इस प्रकार किया है -

"वह अपमान से आहत
अन्याय से पीड़ित
हिंसा के हलकान है
वह जुल्म का आख्यान है।"[1]

सदियों से दलितों को अन्याय एवं अत्याचारों से पीड़ित करते हुए आहत कर दिया है।उनके साथ बराबर हिंसा का व्यवहार होता रहा है,उनके अन्याय की परंपरा आज भी चल रही है।जुल्म का यह आख्यान कभी खत्म न होनेवाला है, ऐसा कवि को लगता है।

'मैं बनारस जाऊँगा' इस कविता में जयप्रकाश कर्दम शोषण का वर्णन इस प्रकार करते है -

"मेरे साथ हिंसा का व्यवहार कर सकते हैं
यह कोई नयी बात नहीं होगी
हमेशा से वे हमारे साथ
हिंसा का व्यवहार करते रहे हैं
उनका चरित्र हैं।"[2]

सवर्णोंने वर्चस्ववादी मानसिकता के साथ दलितों के साथ हिंसा का निर्मम

1. डॉ.जयप्रकाश कर्दम - तिनका-तिनका आग - पृ.40
2. वही - पृ. 53

KOLHAPUR

व्यवहार किया है। यह तो चलता ही रहा है। इसमें कोई नयापन नहीं है। यह तो रोज की ही बात हो गयी है कि दलितों पर हिंसा करने की नई-नई रीति ढूँढ़ ली है। यह तो शोषण कर्ताओं की नियति है।इससे स्पष्ट होता है कि सवर्ण मानसिकता केवल दलितों का शोषण करना चाहती है।उन्हें अपनी पैरोंतले की जूती बनाना चाहते है।

4.2.4.1 यौन शोषण की समस्या :

वैदिक काल से भारतीय समाज-व्यवस्था में यौन संबधो के स्थापना के लिए विवाह के अतिरिक्त अन्य मार्गों को अपनाया गया है।आज शहरी और ग्रामीण दोनो भागों में यौन शोषण की समस्या दिखाई देती है।उच्चवर्ग की विलासिता, कामुकता, भोगवादी दृष्टि, सामाजिक परिस्थिति, नारी की बेबसी, लाचारी आदि यौन शोषण के कारण हैं। डॉ.बलवंत साधु जाधव कहते हैं- "भारतीय समाज में वर्णव्यवस्था में शक्ति और धन के आधार सवर्णो को इज्जत, सम्मान, प्रतिष्ठा के अधिकारी बताया है। गावों में तो दलित युवतियाँ इनके पंजे में फंसकर विलास की सामग्री बनती है।"[1]

आज सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक परिवर्तन के कारण विकास हो रहा है। प्रेम का संबंध सीधे वासना से जुड़ गया है। प्रेम और वासना जीवन का तत्व है, अन्तप्रवृत्ति है, इसे घृणित किया जा रहा है। परंतु आज विकृत मनोवृत्ति के कारण नारी को अवैध यौन संबंधो का प्रयोग करके भ्रष्ट और शोषित किया जा रहा है। जयप्रकाश कर्दम ने अपने कविता-संग्रहों में यौन शोषण के कारण दलित समाज किस तरह पीसा जा रहा है, इस पर प्रकाश डाला है।

जयप्रकाश कर्दम ने अपनी कविता 'किले' में यौन शोषण का चित्रण इस प्रकार किया है -

"इनके चौबारों में जले है
मेरे आसूओं के दीप

---

1. डॉ.बलवंत साधु जाधव - प्रेमचंद के साहित्य में दलित चेतना - पृ. 183

इनके शयनकक्षाओं में बिखरे हैं

मेरी बहनों और बेटियों की

रौंदी गयी अस्मिता के निशान।"[1]

कवि कहता है कि सामाजिक स्तर में सवर्णो ने दलितों का केवल इस्तेमाल ही किया है। दलितों की वेदना, टीस सवर्णो को आनन्द देती है। दलितों के आँसू तथाकथित सवर्णो के आनन्द लेने के साधन है। सवर्णो के शयनागार में दलितों की बहन-बेटियों की कुचली हुई अस्मिता का के पदचिन्ह विद्यमान है। उनकी प्रतिष्ठा के बिखरे हुए तिनके है। दलित लडकियों को सवर्ण अपने हवस का शिकार बनाते है। उनकी इज्जत से खेलते है। यह कवि यहाँ उपर्युक्त पंक्तियों में स्पष्ट करता है।

'गूंगा नहीं था मैं' कविता संग्रह के 'अस्वीकृती' कविता में दलित स्त्री के यौन शोषण का वर्णन इसप्रकार किया है -

"नहीं सिलियां नहीं।

तू इस भ्रम में मत रहना

वह ऐंसा नहीं करेगा

तेरा भावनाओं को गरमाकर वह

तेरे शरीर से खेलेगा

प्यार का स्वांग कर

तेरी शोषण करेगा

वह तुझे रखेल बनाकर रख सकता है।"[2]

सिलिया को कवि उपदेश देता है कि बहन सिलिया तू जिसे अपना पति मानती है वह तुझे अपनाएगा इस भ्रम में तुम मन रहना। क्योंकि वह तुम्हारी भीतर की भावनाओं को जगाकर उन्हें, गरमाकर तुम्हारे केवल शरीर से खेलना जानता है। तुम्हारा

1. डॉ.जयप्रकाश कर्दम - गूंगा नहीं था मैं - पृ. 12
2. वही - पृ. 28, 29

शरीर पाने के लिए ही उसने प्यार स्वांग रचा है। क्योंकि वह तुझे रखैल बनाना चाहता है।

'अम्बेड़कर की संतान' इस कविता में जयप्रकाश कर्दम ने यौन शोषण की समस्या पर इस प्रकार प्रकाश डाला है -

"सहमी-सिमटी सी 'कृष्णा' जानती है
कि उसने अपने जिस्म का
सौदा नहीं किया उसे
जालिम-दरिंदो ने लूटा है।"[1]

कवि कहता है दलित नारियों का भी बड़ी मात्रा में शोषण किया गया है। डरी-सहमी दलित स्त्री कृष्णा को पता है कि उसने अपने जिस्म का सौदा अपनी इच्छा के कारण नहीं किया है। तो जालीम दरिंदों ने उसे लूटा और उसकी इज्जत को रौंदा है।

'अम्बेड़कर की संतान' इस कविता में जयप्रकाश कर्दम ने यौन शोषण को इस प्रकार दर्शाया है -

"नोचते रहे हैं कृष्णा के
जिन्दा जिस्म को
भेड़िए-हैवान
दिन-के दोपहर में।"[2]

दलित स्त्री कृष्णा को मनुष्य का रूप लिए हुए कई भेड़िए, शैतान लुटते हैं, नोंचते है। उन जालिमों की हिम्मत इतनी बढ़ गयी है कि वे दिन-दहाड़े उसकी अस्मत लूटते है इतने वे दरिंदे हैवान बन चुके हैं।

'गूंगा नहीं था मैं' कविता संग्रह के 'अंम्बेड़कर की संतान' इस कविता में यौन शोषण का चित्रण इस प्रकार किया है -

---

1. डॉ.जयप्रकाश कर्दम - गूंगा नहीं था मैं - पृ. 49
2. वही - पृ. 50

"गांव की भरी पंचायत के सामने
जबरन नग्न की जा रही
युवतियों के बेबस विलाप।"[1]

कवि कहता है कि दलितों पर होनेवाले अत्याचारों की मात्रा बढ़ती ही रही है, गाँव की भरी पंचायत के सामने जबरदस्ती दलित युवतियों को नंगा कर दिया जाता है, किसी के भी मन में, दया उत्पन्न नहीं होती। उनकी चीखों से किसी का दिल नहीं दहलता। भरी भीड़ में ऐसी घटनाँए घटती है, जिसमें दलित नारियों को शोषण का केंद्र माना गया है। जयप्रकाश कर्दम ने अपनी कविताओं में यौन शोषण पर विस्तृत प्रकाश डाला है।

4.2.4.2 मजदूरों का शोषण :

भारतीय समाज में दलित वर्ग ईमानदारी से मेहनत मजदूरी करने के पश्चात भी उन्हें उनके काम का उचित मूल्य नहीं दिया जाता। उनकी अभावग्रस्त आर्थिक परिस्थिति का फायदा उठाकर पूजींवादी तथा सामंतवादी वर्ग मजदूरों का शोषण करते है। प्रा.फडणीस मजदूरों के बारे में कहते है- "विभिन्न कारखानो में आठो प्रहर खपनेवाले और मालिकों का उत्पादन बढ़ानेवाला एक अधिकारहीन पूर्जा याने मजदूर वर्ग है। यह मालिकों के जन्मसिद्ध शोषण का अधिकार है।"[2] इस मंतव्य से स्पष्ट है कि मजबूर दिन-रात मेहनत करते है। लेकिन मालिक इनका शोषण करते नजर आते हैं। इसका चित्रण जयप्रकाश कर्दम के 'कलम' कविता में मिलता है -

"कलम चलती है
कलेजों पर भी
कलम से काटे जाते है वेतन
दिहाड़ी मजदूरों के

1.डॉ.जयप्रकाश कर्दम - गूंगा नहीं था मैं पृ. 50
2. प्रा.फडणीस नारायण आवटे-नागार्जून के उपन्यासों में निम्न वर्ग का चित्रण पृ. 36

धोप दिए जाते हैं खंजर

भूखे पेटों में।"[1]

कवि कहता है कि कलम के द्वारा भी किसी का कलेजा छलनी किया जाता है। केवल तलवार से ही ऐसा नहीं होता तो कलम भी ऐसा ही कार्य करती है। कलम के माध्यम से ही दलित मजदूरों की दिहाडी, दिन का वेतन काटने की परंपरा जारी है। ऐसी परंपरा के साथ गरीब, दीन, बेबस दलित मजदूरों के विरोध पर उनके भूखे पेटों में खंजर तक खोप दिए जाते हैं। दिन रात मेहनत करके भी मजदूरों को दो वक्त रोटी नहीं मिल पाती। इसका चित्रण जयप्रकाश कर्दम ने अपनी कविता में किया है।

4.4.4.3 साहूकार द्वारा शोषण :

भारतीय समाज व्यवस्था में प्राचीन काल सें साहूकारो द्वारा शोषण होता रहा है। जिसमें दलित समाज का अधिक मात्रा में समावेश है। जिसमें देहाती दलित जी-तोड़ परिश्रम करके भी दो वक्त की रोटी भी उनके नशीब में नहीं होती। दलितों को कम मजदूरी देंकर साहूकार उनका शारीरिक शोषण करते है। साहूकार लोग दलितों के अज्ञान का फायदा लेकर उनकी जमीन हड़पते है। इसका चित्रण जयप्रकाश कर्दम ने विवेच्य काव्य-संग्रहों में किया है।

'बेमानी है आझादी' इस कविता में जयप्रकाश कर्दम ने साहूकारोंद्वारा होनेवाले शोषण को चित्रित किया है -

"छोटे से कर्ज के बदले

लिख देता है

कई पीढ़ियों की जिंदगी

साहूकार के नाम।"[2]

---

1. डॉ. जयप्रकाश कर्दम - तिनका-तिनका आग - पृ. 29
2. डॉ.जयप्रकाश कर्दम - गूंगा नहीं था मैं - पृ. 24

कवि का मानना है कि सदियों से शिक्षा से वंचित दलितों को छोटे से कर्ज के बदले में अपनी कई पीढ़ियों की जिंदगीयों को साहुकारों के नाम लिखनी पड़ती है। अशिक्षा के कारण सेठ साहुकार कर्जे पर अंगूठा लगवाने के बहाने कई जिंदगीयों का इस्तेमाल करते है। उनका शोषण करते हैं।

'अदालत' कविता में दलितों का होनेवाला साहूकारों द्वारा शोषण कवि यहाँ चित्रित करते है -

"लगवाकर अंगूठा कोरे कागज पर
हड़पते आए हो तुम
मेरे घर-जमीन
लूटते आए हो
मेरे गाय-भैंस तक।"[1]

अशिक्षा के कारण ही सेठ-साहूकार धोखे से अशिक्षित दलितों का कर्जे पर अंगूठा लगवाने के बहाने दलितों की सबकुछ अपने अपने नाम कर देते है। दलितों का घर, उनकी जमीन-जायदाद यहाँ तक की उनकी गाय भैंसों तक को सेठ-साहुकार अपने नाम करवाते हैं। सेठ-साहुकारों के मन में दीन-गरीब दलितों के प्रति तनिक की हमदर्दी नहीं है। वह तो नीरे कसाई लगते हैं। आज भी समाज में साहूकार द्वारा दलितों का शोषण होता है। इस समस्या पर जयप्रकाश कर्दम ने अपनी कविता के माध्यम से प्रकाश डाला है।

4.2.5 दहेज की समस्या :

वर्तमान स्थिति में दहेज समस्या विवाह संस्था का सबसे बड़ा अभिशाप हैं। समाज में दहेज के कारण विवाह एक धार्मिक संस्कार न रहकर सौदे का विषय बन गया है। आजकल लोग दहेज पर रोक होने पर भी चोरी-छिपे दहेज की मांग करते है।

---

1. डॉ. जयप्रकाश कर्दम - तिनका-तिनका आग पृ. 61

लोग अपने लड़के का सौदा करते है। दहेज की वजह से ही सामाजिक और पारिवारिक वातावरण दूषित बनता है। दहेज लेना चारित्रिक पतन का द्योतक है, लेकिन दहेज लेना एक परंपरा ही बन गयी हैं। इस कुप्रथा के कारण ही रूपए और विवाह के बीच एक विलक्षण रिश्ता स्थापित हुआ है। आज समाज में दहेज प्रथा एक बीमारी की तरह फैल रही है। लोग आज भी इसका स्वीकार कर रहे हैं। ये सामाजिक पतन का द्योतक है। लोग दहेज देकर अपनी लड़की को धनी परिवार में भेजकर निश्चिंत होना चाहते है। समाज में लोग चाहते है कि दहेज से अधिक-से-अधिक रूपए प्राप्त करके अपना जीवन सुखी बनाए। समाज में गरीब लोग भी दहेज की अपेक्षा कर रहे है। इस दहेज की समस्या के कारण निम्नवर्ग की कई लड़कियाँ दहेज के लिए रूपएँ न होने के कारण कुँवारी बैठी है। भारतीय सामाजिक जीवन में दहेज एक बड़ा अभिशाप है, जिसके कारण अनेक परिवारों का जीवन छिन्न-भिन्न हो गया है। जयप्रकाश कर्दम ने दहेज की समस्या का अपनी कविता 'ओ नए साल' में इसप्रकार चित्रण किया है -

"पिछले पांच बरस से
बुद्धन की बेटी
दहेज के अभाव में
कुँवारी बैठी है
अब के बरस भी वह
कुँवारी न रह जाएँ।"[1]

कवि कहता है कि आजादी के पश्चात् भी आर्थिक तंगी की वजह से बेटियों को कुँवारा रहना पड़ता है। कविता में बुद्धन नामक दलित व्यक्ति की बेटी दहेज के कारण पिछले पाँच सालों से उसकी शादी नहीं हो पाती। एक तो दो वक्त की रोटी की समस्या है, ऐसे में अन्य आवश्यताओं की पूर्ति असंभव मालूम होती है। सिर्फ दहेज

1.डॉ.जयप्रकाश कर्दम - गूंगा नहीं था मैं - पृ. 62

न जुटाने के कारण कवि का डर लगता है कि शायद इस साल भी वह बिना शादी की न रहे।

4.2.6 नारी जीवन की समस्या :

भारतीय समाज में नारी को महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्राचीन काल में नारी और पुरूष दोनों को समाज में समान स्थान था। डॉ.दुर्गेश नंदिनी का विचार है- "समाज में नारी और पुरूष का अस्तित्व समान है। सच पूछा जाए तो सृष्टि के मूल में नारी का ही अस्तित्व हैं। किंन्तु उन दोनों को समान मानने में ही सृष्टि की वास्तविकता है।"[1] जैसे समय में परिवर्तन होने लगा, वैसे ही समाज में नारी का स्तर निम्न होने लगा। जिसके कारण पुरूष प्रधान संस्कृति का निर्माण हुआ। आदिकाल में भारत में विदेशी आक्रमणों की संख्या बढ़ गयी। विदेशी आक्रमणकर्ता नारीओं को उठाकर ले जाते थे। इनसे बचने के लिए समाज में परदा प्रथा, बालविवाह, सती-प्रथा आदि कुप्रथाओं ने जन्म ले लिया।

समाज के नीतिनियम आज भी नारी का शोषण कर रहे हैं। केवल वासना तृप्ति का साधन नारी को माना जाता है। सामाजिक और आर्थिक स्तर पर नारी का शोषण होता है, उनके साथ गुलामों जैसा बर्ताव किया जाता हैं। मानसिक एवं शारीरिक अत्याचार से शोषित नारी का चित्रण जयप्रकाश कर्दम के कविता-संग्रह में मिलता है।

'अस्वीकृति' कविता में नारी की समस्या को जयप्रकाश कर्दम ने इसप्रकार चित्रित किया है -

"यदि अधिकारों की बात करेगी
अन्याय की खिलाफत करेंगी, तो याद रख
इसे सहन नहीं किया जाएगा,
तेरे समर्पण और त्याग का ईनाम
तुझे छुरे से रेतकर

1. डॉ. दुर्गेश नंदिनी - सातवे दशक के लघु उपन्यासों मे नारी चित्रण पृ. 47

किरासीन से जलाकर या

तंदुर में दूनकर दिया जाएगा।"[1]

कवि सिलिया को उद्देशित कर कहता है कि बहन जितना दबकर रहेगी, गुलामों का जीवन जीएगी, तब तक सवर्ण लोग उसे स्वीकारेंगे। अगर तुमनें अपने अधिकारों के संबंध में कुछ कहा, उस पर होनेवाले अन्याय को लेकर कुछ कहा तो उसे इसका परिणाम भुगतना पड़ेगा। सिलिया की अब तक की सेवा, त्याग, समर्पण आदि मूल्यों के बदले में उसे छूरे से रेतकर सम्मानित किया जाएगा। या उस पर केरोसिन डालकर उसकी अब तक की गुलामी को ईनाम दिया जाएगा। अगर यह संभव नहीं हुआ तो उसे तंदूर में दूनकर उसे उसका ईनाम दिया जाएगा।

जयप्रकाश कर्दम ने 'अक्करमाशी' कविता में दलित नारी की समस्या को इस प्रकार अंकित किया है -

"अपनी मां के कुकर्मो के कारण

नही हूं मैं अक्करमाशी

मैं उसकी विवशता का परिणाम हूँ

पाटील की औलाद होकर

बाप से बेनाम हूं।"[2]

'अक्करमाशी' ऐसा संबोधन करने पर कवि अपनी माँ का समर्थन करते हुए कहते है, कि उनकी माँ के कुकर्मो के कारण वह अक्करमाशी नहीं बने बल्कि यह तो उनकी माँ की मजबूरी है, विवशता है। इसी का परिणाम कवि का अस्तित्व है।और कडुआ सच तो यह है कि पाटील की औलाद होने के बावजूद कवि को बाप के नाम से वंचित रहना पड़ता है। यह उनकी और उनके माँ की विड़ंबना है।

---

1. डॉ. जयप्रकाश कर्दम - गूंगा नहीं था मैं - पृ. 30
2. वही - पृ.40

‘आधी दुनिया की आवाज’ कविता में जयप्रकाश कर्दम नारी की वर्तमान स्थिति को दर्शाते है -

“वह भी देवी है
किन्तु दीन
वह भी जननी है
किन्तु हीन
वह भी पूजनीय है
किन्तु उपेक्षित
वह भी शक्ति है
किन्तु अधीन
स्त्री होकर भी
नहीं बन पाती वह हिस्सा
उस समाज का ।”[1]

प्रस्तुत कविता में ‘स्त्री’ की विवशता को कवि ने बयान किया है। स्त्री देवी तो है किंतु दीनता से भरी है। वह जननी तो कहलाती है परंतु त्याज्य एवं हेय है। उसकी देवी के रूप में पूजा तो की जाती है पर उसे वंचनाऐं सहनी पड़ती है, उसकी उपेक्षा होती है। उसे शक्ति माना तो जाता है लेकिन अपने अधिकारों के नीचे उसे दबा एवं कुचला जाता है। समाज के दो महत्त्वपूर्ण हिस्से स्त्री एवं पुरूष है इसके बावजूद भी स्त्री आज भी इस समाज का हिस्सा नहीं बनी, यह सच्चाई है।

‘तिनका तिनका आग’ इस कविता संग्रह के ‘आधी दुनिया की आवाज’ कविता में जयप्रकाश कर्दम ने नारी समस्या पर इस प्रकार प्रकाश डाला है -

“स्त्री होने से पहले

---

1. डॉ.जयप्रकाश कर्दम - तिनका-तिनका आग पृ. 66

जहां होती है वह
एक जाति
पहचाना जाता है उसे
उसकी जाति से
कैसे करे वह अनुभव
एक होने का
कैसे माने खुद को
एक समाज।"[1]

स्त्री समाज का हिस्सा है, ऐसा केवल कहा जाता है पर उसे समानता का अधिकार हरगिज नही मिलता। स्त्री से पहले उसकी अलग सी जाति मानी जाती है। समाज का अविभाज्य अंग होने के बावजूद उसकी अलगता को ही अनुभव किया जाता है। फिर वह कैसे अपने आप को इस पुरूषों के समाज का हिस्सा माने। दलितों में भी स्त्री को दलित मानकर जो उसकी उपेक्षा की जाती है, उसे कवि ने यहाँ प्रस्तुत किया है।

4.2.7 भ्रष्टाचार की समस्या :

स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार देश के विकास के लिए कार्य कर रही है। एक ओर देश का विकास हो रहा है तो दूसरी ओर विकास के साथ समस्याएँ भी जूड़ी आ रही है। ये समस्याएँ सामान्य लोगों का जीना मुश्किल कर रही है। इन समस्याओं में भ्रष्टाचार की समस्या से प्रमुख है। भ्रष्टाचार के शिकार सामान्य लोग ही हो रहे है। इससे सामाजिक नीतिमूल्यों का पतन हो रहा है। भ्रष्टाचार के कारण ही भारतीय समाज की उन्नति नहीं हो रही है। समाज के सभी वर्ग के लोग इस समस्या से पीड़ित है। सरकारी अफसर एवं राजनीतिक लोग इसे बढ़ावा दे रहे हैं। समाज में भ्रष्टाचार की जड़े बहुत गहरी है।

---

1. डॉ.जयप्रकाश कर्दम - तिनका-तिनका आग - पृ. 66

मनुष्य जीवन में अर्थ को महत्त्व आने के कारण लोग श्रम न करके सफलता पाना चाहते है, इसी कारण भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। भ्रष्टाचार को सरल शब्दों में 'रिश्वत' कहा जाता है। भ्रष्टाचार करनेवाले जमींदार, महाजन, सरकारी अफसर, राजनीतिक नेता लोग है। ये लोग भ्रष्टाचार द्‌वारा सामान्य लोगों का शोषण करते है। आजादी के बाद की सबसे बड़ी समस्या भ्रष्टाचार की समस्या है। भ्रष्ट आचरण, अनैतिक कर्म भ्रष्टाचार के मूल में है। शासकीय कर्मचारी, राजनीतिक नेताओं और सरकार के कारिंदे इनके आपसी संबंध गहरे होते है, जो अपना तालमेल करके भ्रष्टाचार करते है और सामान्य लोगों का शोषण करते है। जयप्रकाश कर्दम ने अपने कविता-संग्रहों में भ्रष्टाचार की समस्या पर भी प्रकाश डाला है।

'आरक्षण' कविता में जयप्रकाश कर्दम भ्रष्टाचार की समस्या को इस प्रकार अंकित करते है -

"आग लगती है तुम्हें
मेरी उपलब्धियों से ओर
अनुचित लगता है तुम्हें मेरा प्रमोशन
क्या केपिटेशन फीस
यानी रिश्वत देकर अड़मिशन लेना
उचित है? "[1]

कवि कहता है दलितों के आरक्षण के संबंध में सवर्णों की घृणा सदियों से प्रचलित एवं स्पष्ट है।कवि उन्हें स्पष्ट कहता है कि दलितों की आज की उन्नति को देखकर सवर्णो के दिल-दिमाग में आग सी लगती है। दलितों के नई उपलब्धि पर वे आग बबूला होते है। दलितों का प्रमोशन सवर्णो को बेमानी लगती है। एक ओर वे दलितों के आरक्षण मुद्दे को लेकर जहर उगलते है, पर मेड़िकल कॉलेजों में पैसे देकर

1.डॉ.जयप्रकाश कर्दम - गूंगा नहीं था मैं - पृ. 15

आपका ॲड़मिशन लेना कहाँ का न्याय है। यहाँ पर कवि भ्रष्टाचार की समस्या को उजागर करता है।

'अम्बेड़कर की संतान' इस कविता में जयप्रकाश कर्दम भ्रष्टाचार को इस प्रकार दर्शाते है -

"जेल के सीखचों के पीछे
छटपटाता कसमसता 'मंगल'
जानता है कि वह
चोर डकैत या हत्यारा नहीं हैं, उसे
झूठे केस में फंसाया गया है।"[1]

कवि कहता है कि आज दलितों के प्रति तिरस्कार के परिणाम स्वरूप सवर्ण लोग उन्हें झूठे केस में फँसाकर जेल की सलाखों के पीछे सड़ने के लिए विवश करते है। ऐसे ही दलितों पर होनेवाले अत्याचारों की गति अबाध है। ऐसे ही एक झूठे केस के बीच निर्दोष होने के बावजूद उसे इस भट्टी में झोंका गया है। उसका दोष बस इतना ही है कि वह दलित है। कोई चोर एवं डकैत नहीं हैं।

भ्रष्टाचार की समस्या को जयप्रकाश कर्दम ने अपनी कविता 'ओ नए साल' में उजागर किया है -

"अन्याय की खिलाफत करने वालों को
झूठे मुकादमों में फंसाकर उन्हें
जेलों में न ढूंसा जाए
इसका कुछ जतन करना।"[2]

कवि का मानना है कि आए दिन दलितों पर होनेवाले शोषण प्रक्रिया निरंतर जारी है। जो की दलित उनपर होनेवाले अन्याय को मुखर करते हुए जेल की

1.डॉ.जयप्रकाश कर्दम - गूंगा नहीं था मैं - पृ. 49
2. वही - पृ.64

सलाखों के पीछे मरने के लिए मजबूर किया जाता है। यह सिलसिला बड़ा लम्बा है। तो कवि अपनों पर होनेवाले इस अन्याय की संवेदना को महसूस करने के लिए साथ ही कारगर कदम उठाने के लिए ध्यान देने के लिए कवि आनेवाली पीढ़ियों को संदेश देता है।

'तिनका तिनका आग' कविता संग्रह के 'अदालत' कविता में कवि ने भ्रष्टाचार को दर्शाया है -

"नहीं दर्ज होने दी रिपोर्ट तक
थाने में
ये सब धोंखे और धांधली
तुम करते आए हो
कर रहे हो आज भी
प्रभावित कर सकते हो तुम
पुलिस, प्रशासन और शासन को
खरीद सकते हो
न्याय को भी
हो सकते हो बरी
अदालत से बाइज्जत हर केस में।"[1]

कवि का कहना है कि आज की दलितों पर होनेवाले अन्याय को दबाया जाता है। अगर दलित अपने पर हुए अन्याय की रिपोर्ट पुलिस में लिखना चाहता है, तो सवर्ण अपनी पहूँच का प्रयोग कर उनकी रिपोर्ट तक दर्ज नहीं करने देते। ऐसे ही सब घपले, धोखे और धांधली के रास्ते आज तक सवर्णों ने अपनाए हैं। पुलिस, शासन एवं प्रशासन तक को खरीदने की क्षमता सवर्ण रखते हैं।

---

1. डॉ.जयप्रकाश कर्दम - तिनका-तिनका आग - पृ. 61

यह तो कुछ की नहीं बल्कि यूँ कहा जाए तो अनुचित न होगा कि न्याय को भी वे अपनी पहूँच के द्वारा खरीद सकते है एवं न्याय अपने पक्ष में करा लेते है। पैसे, संपत्ति का मोह देकर हर एक मुकदमें से जो दलितों ने दाखिल किया था उससे वे बाइज्जत बरी हो जाते है। सब मामला सवर्ण इस तरह निपटाते है कि वे उसमें निर्दोष साबित हो। इस प्रकार सवर्णो के भ्रष्टाचारी व्यवहार को कवि ने यहाँ बयान किया है।

4.2.8 पारंपारिक व्यवसाय करने की समस्या :

भारतीय समाज व्यवस्था में जो शूद्र लोग है, उन्हें उच्चवर्ग की सेवा करनी पड़ती है। गाँव में जो हीन माने जाने वाले कामों को दलितों को ही करना पड़ता है। गाँव की गंदगी साफ करना, मरे हुए पशु की खाल खिंचना ये सारे काम दलित वर्ग के लोगों को ही करने पड़ते हैं। प्राचीन काल से ही दलित वर्ग हीन माने जानेवाले काम को करता आया है। इसी परंपरा के कारण ही दलित न चाहते हुए भी उच्चवर्ग के स्थापित व्यवस्था के कारण अपने मर्जी के खिलाफ ये व्यवसाय कर रहे हैं। दलित लोगों के पास आर्थिक प्राप्ति का कोई साधन नहीं होता, इसलिए विवश होकर ये काम करने पड़ते हैं। इसके बारे में डॉ.अर्जुन चव्हाण जी करते है - "इस वर्ग की स्थिति उच्च निम्न वर्ग से बदतर होती है, ये लोग प्रतिदिन रोजगार पाने में असमर्थ होते है। इन्हें एक दिन काम मिला तो दो दिन बेकार रहना पड़ता है। इनकी आर्थिक प्राप्ति का न कोई साधन होता है, न कोई निश्चित मात्रा।"[1] इस कथन से स्पष्ट होता है आर्थिक व्यवस्था के कारण दलित लोग मजबूरी में पारंपारिक व्यवसाय करते है।

दलितों को परंपरा और विवशता के कारण ये पारंपारिक व्यवसाय स्वीकारना पड़ता है। इस समस्या का चित्रण जयप्रकाश कर्दम के कविता-संग्रह में मिलता है।

---

1. डॉ.अर्जून चव्हाण - राजेंद्र यादव के उपन्यासों में मध्यमवर्गीय जीवन - पृ.74

'जाति का व्याकरण' इस कविता में दलित समाज के पारंपारिक व्यवसाय करने की समस्या को उजागर किया है -

"क्या तुम्हें पता है
कैसा होता है
मरे हुए पशु के
मांस का स्वाद
क्या तुम बतला सकते हो
कैसी होती है
पशु की खाल निकालते समय की
गंध
क्या तुम जानते हो
कैसे रंगा या पकाया जाता है
चमड़ा
कैसी चलाई जाती है
रांपी और कतरनी
बनाएं जाते है जूते।"[1]

कवि ने दलित जीवन की विड़ंबना को मुखर करते हुए कहा है, किस प्रकार दलितों को मजबूरी में जीवन बिताना पड़ता है। भूख के मारे मरे पशु का मांस खाना पड़ता है। कुछ पैसों के बदले में मरे हुए पशु की खाल निकालते समय दूर्गंध सहन करनी पड़ती है। चमड़े को रंगाते समय एवं पकाते समय असहनीय गंध को झेलना पड़ता है पापी पेट को पालने के लिए यह सब दलितों को सहना पड़ता है। खस्ता हालातों की वजह से यही सब जीविका चलाने के लिए, करने के लिए वे बाध्य है। रांपी और कतरनी से जूते कैसे बनाए जाते है। आदि बातों का एहसास कवि यहाँ कराता है।

1. डॉ.जयप्रकाश कर्दम - तिनका-तिनका आग - पृ. 25

जयप्रकाश कर्दम 'जाति का व्याकरण' इस कविता में पारंपारिक व्यवसाय की समस्या का चित्रण इस प्रकार किया है -

"ढोना पड़ा होता
सिर से चुचियाता
टट्टी का टोकरा
खानी पड़ी होती
मेरी तरह
दुत्कार और गालियाँ।"[1]

दलितों के जीवन के घिनौने एवं तिरस्कृत अंग पर यहाँ कवि ने प्रकाश डाला है। दलितों में भी भंगियों को सवर्णो के घरों से एवं पाखानों से अपने सिर पर मैले से भरी बाल्टीयाँ दूर लेकर जानी होती थी। तब यह जो गंदगी है, उसे उन्हें सहना पड़ता। यह सब करते हुए वे मन के भावों मे कुचले हुए गंदे काम करते। विशेषकर भंगी महिलाओं को टट्टी के टोकरे सिर पर लेने पड़ते और इस काम में थोड़ा सा कुछ इधर-उधर हो जाता तो मालिकों की गालियाँ भी खानी पड़ती, उनकी दुत्कार भी सहनी पड़ती। यहाँ दलितों की त्रासदी का वर्णन है।

4.2.9 गैर-जिम्मेदारी की समस्या (वृद्धावस्था की समस्या) :

मनुष्य जीवन में तीन अवस्थाएँ आती है - बाल्य अवस्था, युवा अवस्था और वृद्धावस्था। व्यक्ति जब बाल्य अवस्था में होता है, तब घर में सबका लाड़ला होता है। उसके ऊपर घर की कोई जिम्मेदारी नहीं होती है।लेकिन जब वह युवा होता है, उसे उसके जिम्मेदारी का एहसास होता है। वह घर के लिए खून-पसीना एक करता है, और घरवालों को खूश रखने का प्रयास करता है।लेकिन जब वह वृद्धावस्था में आता है तो उसके अपने लोग भी उसे दुर्लक्षित करते है।लोग बुढ़ापे में बच्चों का आसरा चाहते है,

1. डॉ.जयप्रकाश कर्दम - तिनका-तिनका आग - पृ. 26

लेकिन आज का युवा वर्ग पाश्चात्य विचारधारा से प्रभावित है। वो अपने माता-पिता को महत्त्वपूर्ण नहीं मानते। वो उन्हें गवार, अनपढ़, बेकाम के नजर आते है। पाश्चात्य विचारधारा का अनुकरण करते हुए वो अपने माता-पिता से दूर रहते है। अपने माता-पिता को माता-पिता कहने में उन्हें शरम आती है। आज युवा वर्ग नौकरी व्यवसाय के कारण घर से बाहर जाते है और वही अपनी बीवी, बच्चों के साथ मजे में रहते है। वो शहर में रहने से गाँव में अपने माता-पिता की तरफ जाना ही छोड़ देते है। घर में उनकी देखभाल कोई नहीं कर सकता यह सोचकर उन्हें वृद्धाश्रम में रखा जाता है। यह वर्तमान युग का दिल दहलानेवाला सत्य है। जयप्रकाश कर्दम के कविता-संग्रहो में युवा वर्ग के गैर जिम्मेदारीओं का चित्रण स्पष्ट दिखाई देता है।

'कलिया की मौत' कविता में जयप्रकाश कर्दम ने गैरजिम्मेदारी की समस्या का अंकन इसप्रकार किया है -

"शहर में रहने लगा शादी भी उसकी हो गयी
नव-संस्कारों की जकड़ में जिंदगी थी खो गयी।
परिचय नए बनते गए दुनिया नयी बसती गयी
घर-गाँव रिश्तेदार सबसे दूरियाँ बढ़ती गयी।
हर महीने, शुरू में फिर देर में जाने लगा
धीरे धीरे माँ से मिलना भी था कम होने लगा
साथ चलने के लिए माँ ने कहा जब भी कभी
टाल देता कोई न कोई बहाना कर तभी।"[1]

प्रस्तुत कविता में कवि ने मनुष्य के बदलते हुए जीवन पर प्रकाश डाला है। नए माहौल, शहर की हवा लगने के बाद व्यक्ति कैसे बदलता है यह कवि ने यहाँ स्पष्ट किया है। शहर में रहने के बाद कलिया के बेटे की शादी होने पर उसका पूरा

1.डॉ.जयप्रकाश कर्दम - गूंगा नहीं था मैं - पृ. 46

जीवन बदल जाता है। उसमें उसकी जिंदगी खो गयी। नए-नए परिचय होनेपर एक नई दुनिया का रूप उसके लिए अपेक्षित हो गया। उसके लिए गाँव-देहात रिश्तेदार आदि बहुत दूर के हो गये फिर गाँव आकर उसका माँ से मिलना दिन-ब-दिन कम होता गया। माँ ने उसके साथ शहर चलने का आग्रह करने के बावजूद वह कोई मजबूरी बताकर उसे साथ ले जाना टालने लगा। इस प्रकार शहर में जाने पर व्यक्ति के बदलाव का यहाँ परिचय मिलता है।

'कलिया की मौत' कविता में जयप्रकाश कर्दम ने गैरजिम्मेदारी समस्या का चित्रण किया है -

"मेरी कुछ मजबूरियां है, माँ समझती क्यों नहीं।
साथ तो मैं ले चलूं लेकिन रखूं तुझको कहां
ऊंची-ऊंची जातियों के लोग रहते है वहां
सभ्य-शिक्षित हाइजेण्टरी लोग सब फारवर्ड है।
लेकिन मां तू तो निरी अशिक्षित और बैकवर्ड है।"[1]

माँ जब बेटे के साथ शहर चलने का आग्रह करती है तब वह माँ को अपनी मजबूरीयों का बहाना बताकर टालता रहा। माँ को रहने का ठौर नहीं है यह बहाना बताकर वह उसे भरमाता रहा। साथ ही वहाँ बड़ी-बड़ी ऊँची जाति के लोग रहते है, सभ्य-सुसंस्कृत समाज रहता है और उसके सामने अपनी-माँ की अशिक्षा, अनाड़ीपन से उसे शर्म महसूस होती है तथा माँ की पिछड़ेपन की बात को लेकर वह त्रस्त है। प्रस्तुत कविता में कवि ने व्यक्ति अपने परिवेश की सच्चाई किस प्रकार भूलता है, इस व्यथा का चित्रण कवि ने किया है।

'गूंगा नहीं था मैं' कविता संग्रह के 'कलिया की मौत' कविता में जयप्रकाश कर्दम ने गैरजिम्मेदारी की समस्या पर प्रकाश डाला है -

1. डॉ.जयप्रकाश कर्दम - गूंगा नहीं था मैं - पृ. 46

"साल भर से अब कभी बेटा नहीं आया था घर
न कभी चिट्टी ही भेजी, न कभी ली कुछ खबर
पैसा भी उसने कोई भेजा नहीं इस साल में
सोचा कभी यह तक नहीं जीती हैं माँ किस हाल में।"[1]

कवि यहाँ कहता है संतान का अपना परिवार बनने के पश्चात् एवं शहर में बसने के बाद गाँव की ओर उसका झुकाव निहायत कम हो जाता है। बूढ़ी विधवा माँ को साल हो गया बेटे ने चिट्ठी तक नहीं लिखी है और न ही वह घर आया है। माँ की उसने कोई खबर नहीं ली है साथ ही वह न ही घर आया है नहीं उसने पैसा भेजा है। पूरा साल बीतने के बाद भी बेटे ने माँ के संबंध में यह तक नहीं सोचा कि वह जिंदा है या की नहीं। पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण करते हुए युवावर्ग अपने ही बीवी-बच्चों में मस्त रहता है। इसका चित्रण कवि ने किया है।

'लालटेन' कविता में कवि ने गैरजिम्मेदारी के दर्शन इसप्रकार करवाएँ है -

"बाकी के दिन
वह भूखी रहती है कि नंगी
बीमार रहती है कि परेशान
बहने भले ही
कभी-कभार जाकर खबर ले आएं
लेकिन, भाइयों में से कोई भी
जाकर उसे नहीं देखता है
सब अपने आप में मस्त हैं
अपनी-अपनी फेमिलियों में व्यस्त हैं।"[2]

कवि का मानना है शहरों में आने के बाद व्यक्ति की संवेदनाएँ मर जाती

1. डॉ.जयप्रकाश कर्दम - गूंगा नहीं था मैं - पृ. 47
2. वही - पृ. 60

है। माँ के बारे में यहाँ उपेक्षा दिखायी देती है। वह भूखी-प्यासी है, बीमार है या परेशान संतान को उसके बारे में कोई सरोकार नहीं है। बहने माँ का खयाल अपने परिवारों के संभालते हुए रखती है। पर बेटों को फुरसत नहीं है कि माँ को जाकर देख आए। सब अपने-अपने बीवी-बच्चों में मस्त है, अपनी-अपनी जिंदगी जी रही हैं लेकिन माँ का क्या हाल इसे देखना कोई अपनी जिम्मेदारी नहीं समझता।

'लालटेन' कविता में जयप्रकाश कर्दम गैरजिम्मेदारी का चित्रण इसप्रकार करते हैं -

"सब अच्छा पी-खा रहे है
दुनिया के साथ
कम्पीटीशन मे आ रहे हैं
सब के जीवन में आल्हाद है
सब के जीवन में सवेरा है
लेकिन माँ की जिंदगी में
आज भी अंधेरा है।"[1]

कवि ने यहाँ गैरजिम्मेदाराना व्यवहार पर प्रकाश डाला है कि माँ के सिवाय सब अच्छे-खासे हैं। अच्छा खा-पी रहे है, मजे कर रहे हैं। उनका दुनिया के साथ कम्पीटीशन में आना शुरू हैं। अपना तबका छोड़कर ऊँचें उठ रहे हैं। सभी के जीवन में अब आनंद एवं उमंग हैं। सबके जीवन में अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करनेवाला एक नया सबेरा आया है, सब मस्त हैं। अपने परिवार में राजी-खुशी है, परंतु माँ की उपेक्षा उन्होंने की हैं। माँ के जीवन में अब तक केवल अंधेरा-ही-अंधेरा है। लालटेन के समान जिसने सबके जीवन का अंधकार दूर किया था वही आज अंधेरे में हैं। लेकिन इस बात का किसी को भी लेना-देना नहीं है। इस प्रकार यहाँ अपनी कविताओं के माध्यम से गैरजिम्मेदारी समस्या पर प्रकाश डाला है।

1. डॉ.जयप्रकाश कर्दम - गूंगा नहीं था मैं - पृ. 60

४.2.10 अंधविश्वास की समस्या :

भारतीय समाज व्यवस्था में धर्म को महत्त्वपूर्ण स्थान है। धर्म के आधार पर ही मानव अपना जीवन बीताते है। मानव को धर्म पूर्वजों से विरासत के रूप में मिला है। सभी लोगों के मन में धर्म के प्रति श्रद्धा होती है। धर्म के इसी शक्ति के कारण लोग पूरानी रूढ़ी तथा प्रथाओं का पालन करते है। इसी कारण समाज में अंधविश्वास का निर्माण हुआ। यह इस तरह से फैल गया है कि, इसका प्रभाव आज के यंत्रयुग में भी दिखाई देता है। इसके बारे में डॉ.गणेशप्रसाद पाण्ड़ेय का कथन है - "बचपन में बने हुए संस्कार और अंधविश्वास में पूर्णतया छूटकारा पाना आसान नहीं होता हैं। लड़के तो लड़के, बड़े-बुढ़े और बहुत से शिक्षित व्यक्ति भी इसके प्रभाव से बाहर नहीं हो पाते।"[1] इस कथन से स्पष्ट होता है कि अंधविश्वास का पगड़ा समाज के हर हिस्से में दिखाई देता है।

समाज में शिक्षित लोग हो या अज्ञानी लोग अंधविश्वास में बहकर पैसों को लूटाते है। इसी वजह से अंधविश्वास में डूबे समाज का विकास नहीं हो पाता। समाज-व्यवस्था में दलित वर्ग में भी अंधश्रद्धाएँ नजर आती है। समाज में लोंग अपनी व्यथाओं को दूर करने के लिए अंधश्रद्धा के वश होते नजर आते है। जयप्रकाश कर्दम के कविता-संग्रहों में अंधविश्वास की समस्याओं का चित्रण प्राप्त हुआ है।

'तुमने कहा' इस कविता में अंधश्रद्धा को कवि ने इस प्रकार व्यक्त किया है।

"तुमने कहा -
ईश्वर 'परम पद' है
उसकी प्राप्ति
जीवन की चरम उपलब्धि है

1. गणेशप्रसाद पाण्डेय - आठवे दशक की कहानी में ग्रामजीवन पृ. 75

तुमने बतलाया

ईश्वर दारिद्रय में वास करता है।"[1]

प्रस्तुत उद्धरण में कवि का कहना है कि आज तक सवर्णों ने दलितों पर जो थोपा है दलितों ने उसे माना है। दलितों ने उनकी हर बात का अंध विश्वास किया है। रूढ़ियों परंपराओं के नाम पर दलितों का सवर्णों ने शोषण, अनाचार, अत्याचार आदि मिला है। ईश्वर परम पद है ऐसा दलितों से कहा गया और उन्होंने उसे सहर्ष स्वीकार किया। उसकी प्राप्ति जीवन की चरम उपलब्धि है ऐसा कहा उसे भी मान लिया गया। उन्होंने बतलाया की ईश्वर दारिद्रय में वास करता है। ऐसे कई ढकोसले उदाहरण यहाँ दिखाई देते है।

इस कविता में जयप्रकाश कर्दम ने अंधविश्वास की समस्या का इस प्रकार चित्रण किया है।

"जो दूसरों की सेवा करता है

वह धर्म का काम करता है

पुण्य कमाता है

'नर सेवा नारायण सेवा' है

यह की तुम्हीं ने बतलाया।"[2]

सवर्णों ने दलितों से कहा कि जो दूसरों की सेवा करता है, वह धर्म का काम करता है एवं पुण्य कमाता है। स्वर्ग में जाता है। ऐसी कई बातें सवर्णों ने दलितों को भुलावे में रखने के लिए बनायी है। सवर्ण चाहते है कि दलित सदियों से दलित ही रहे जो स्थान उसका समाज में है वहीं पर वे रहें। 'नर सेवा ही नारायण सेवा है' ऐसा डंके की चोट पर कहते हुए उन्होंने दलितों की सदियों से सड़े गंधे स्थान पर रखने का जो हेय काम किया है, इसका कवि ने यहाँ पर्दाफाश किया है।

1.डॉ. जयप्रकाश कर्दम - गूंगा नहीं था मैं - पृ. 17
2.वही - पृ. 17, 18

'शुक्र हैं तू नहीं है' इस कविता में अंधविश्वास का चित्रण कवि ने इस प्रकार किया है।

"ईश्वर।
कहते है
तू (सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान) है,
सब कुछ
तेरी इच्छा और आदेश से होता है
तेरी इच्छा के बिना
पत्ता तक नहीं हिल सकता।"[1]

कवि ने यहाँ ईश्वर के संबंध में कहा है कि सवर्णों ने अपने स्वार्थ के लिए अपनी इच्छाऐं ईश्वर के नाम पर दलितों पर थोपी है। ईश्वर का वास्ता देकर वे सक्ती से गलत रूढ़ियों एवं परंपराओं का निर्वाह करते हुए दलितों को दबाते आए है। इस स्वर को फूँकने का प्रयास कवि ने किया है। ईश्वर की सत्ता से ही सबकुछ उसकी इच्छा एवं आदेश से ही होता है, उसकी इच्छा के बिना कोई पत्ता तक नहीं हिलता इतनी ईश्वर की सर्वव्यापकता हो यही संकेत यहाँ कविने दिया है। सवर्ण लोग दलितों पर ये सब सदियों से लादते आए हैं।

4.2.11 सांप्रदायिकता की समस्या :

मानव समाज में धर्म को बहुत महत्त्व है। सांप्रदायिकता का धर्मांधता से गहरा संबंध रहा है। धर्म के नाम से मनुष्य के मन में एक अजब सा डर रहता है। इस डर को दूर करने के लिए मनुष्य जो काम करता है वो धर्मांधता है। आज सांप्रदायिकता का बड़े जोरो-शोरो से प्रसार होने लगा है। सांप्रदायिकता के शिकंजे में पूरे मानव जाति को कस लिया है। आज समाज में धर्म के नामपर अनेक धार्मिक दल और संगठन बन रहे है। ये दल और संगठन मानव को महत्त्व न देकर सिर्फ धर्म के नाम पर ही चल रहे

1.डॉ. जयप्रकाश कर्दम - गूंगा नहीं था मैं - पृ. 31

है। वर्तमान युग में इस समस्या का विकराल रूप समाज के सामने आ रहा है। सांप्रदायिकता की समस्या को दूर करना एक व्यक्ति का काम न होकर इसके समाधान के लिए पूरे मानव समाज को एक होना चाहिए। इस समस्या के कारण सामान्य लोगों का जीवन तहस-नहस हो गया। इसके बारे में चमनलाल लिखते है - "सांप्रदायिकता बीसवीं सदी में भारतीय समाज की सबसे गंभीर समस्या बनकर सामने आती है और भारत का राष्ट्रीय आंदोलन इसके बहुत गहरे खतरों, इसके दूरगामी परिणामों को पहचानने में पूरी तरह सफल नहीं हो पाता।"[1] जयप्रकाश कर्दम ने अपने कविता-संग्रहो में सांप्रदायिकता की समस्या जैसी वर्तमान युग की प्रधान समस्या का चित्रण इस प्रकार किया है।

'घुप्प अंधेरा देखा' इस कविता में सांप्रदायिकता की समस्या का चित्रन कवि ने इस प्रकार किया है।

"एक दुजे के लिए कल तलक कुर्बान जो
बीच उनके आज रिश्ता मौत का गहरा देखा।
चर्च का मसला कहीं पर रामभूमि का विवाद
कश्मीर से गुजरात तक अलगाव का कोहरा देखा।
बिछ रहीं लाशे जमीं पर मच रहा उत्पात है
वतन पर हावी मजहब का भाव घनहरा देखा।"[2]

कवि कहता है कि देश में सांप्रदायिकता को लेकर माहौल में परिवर्तन हो रहा है। धर्म का भेद न मानकर जो एक दूसरे के लिए कुर्बान हो सकते थे वे आज मौत का रिश्ता एक दूसरे के साथ रखते हैं। लोग आज कई मामलों पर लड़ते दिखायी देते है। कहीं चर्च तो कहीं राम जन्मभूमि को लेकर विवाद चला है। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक एकत्र के बजाए अलगाव का भाव है। लाशों का ढेर मजहब के भाव गहरे होते हुए कवि देखता है।

1. संपा. नारायणराय विभूति - कथा साहित्य के सौ बरस - पृ. 134
2. डॉ.जयप्रकाश कर्दम - तिनका-तिनका आग - पृ. 31

'मनुष्यता' इस कविता में सांप्रदायिकता कवि ने इस प्रकार व्यक्त किया है -

"गोधरा से झज्झर तक
देश सांप्रदायिकता की भट्टी में
भुन रहा है।"[1]

सांप्रदायिकता ने जनता को विभ्रिष्ट कर दिया है। जहाँ भी देखो आतंक का मौहाल बना है। गोधरा से लेकर झज्झर तक देश सांप्रदायिकता की लगाई हुई आग में जल रहा है। साथ ही आज जातियों के भेदाभेद के कारण भी ऊँच-नीच जी दीवारें खड़ी हो गयी है। जातिवाद का माहौल इतना गर्म है कि लगता है जाति वाद की भट्टी में देश भुन रहा है। धार्मिक भेदाभेद एवं जातीय भेदाभेद इतना फैला हुआ है। लगता है कि पूरा देश इस भट्टी में जलकर राख हो रहा है, इसप्रकार कवि ने यहाँ सांप्रदायिकता की समस्या पर प्रकाश डाला है।

'तिनका तिनका आग' इस कविता संग्रह के 'मनुष्यता' इस कविता सांप्रदायिकता की समस्या का चित्रण कवि ने इस प्रकार किया है -

"फासीवादी ताकते
धर्म के नामपर
मनुष्यता को कुचल रही है
यह सब उस देश में हो रहा है
जो मनुष्यता को
सबसे बड़ा धर्म कहता हैं।"[2]

कवि का मानना है कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है। सभी धर्म के लोग यहाँ बसर करते है। परंतु फासीवादी ताकतों ने आज देश में डेरा जमाया हुआ है। उनका प्रभाव इतनी बड़ी मात्रा में है कि धर्म के नाम पर आज मनुष्य की मनुष्यता कुचल रहा है,

1. डॉ.जयप्रकाश कर्दम - तिनका-तिनका आग - पृ. 31
2. वही - पृ. 37

अपने पैरों तले रौंद रहा है। दुर्भाग्य की बात तो यह है कि यह सब दंगे-फसाद मनुष्यता का दलन उस देश में हो रहे है जो देश मनुष्यता को ही अपना सबसे बड़ा धर्म कहता है। मनुष्यता, त्याग, सहिष्णूता आदि मूल्य जिस देश की नींव के रुप में है उसी देश में यह मुर्दनी एवं अवसाद धर्म के नामपर छाया हुआ है। यही कवि यहाँ स्पष्ट करते हैं।

4.2.12 भूख की समस्या :

मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकता भूख है। समाज में हर व्यक्ति भूख के पूर्ति के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहता है। लोग अपनी भूख को मिटाने के लिए कोई न कोई काम करते है। मनुष्य को भूख बैचेन करती है। मनुष्य अपनी भूख मिटाने के लिए अच्छे मार्ग से प्रबंध न हुआ तो बुरे मार्ग का अवलंब करता है। इसके कारण मनुष्य को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। समाज में दलित वर्ग में भूख की समस्या ज्यादा मात्रा में दिखाई देती है। दलित वर्ग के लोग गाँव के उच्च वर्ग के लोगों का काम करते है, लेकिन इसका मुआवजा वो समय पर नहीं देते जिसकी वजह से दलित वर्ग के लोग भूखे रहते हैं। दलित वर्ग के पास आर्थिकता का कोई दुसरा साधन न होने की वजह से वे गाँव का कोई भी काम करके अपने तथा अपने घरवालों का पेट भरते है। दलित लोग परंपरा से बंधे होने के कारण उच्चवर्गीयों की सेवा करना ही अपना काम समझते हैं। दलित लोग उच्चवर्ग के लोग जो कुछ भी दे उससे अपनी भूख को मिटाते हैं। इसी परिस्थिति के कारण दलित वर्ग को भूखा रहना पड़ता है। जयप्रकाश कर्दम ने अपने कविता संग्रहों में भूख की समस्या का अच्छी तरह चित्रण किया है।

'बेमानी है आझादी' इस कविता में कवि कहते हैं -

"जूझता है जो पेट की क्षुधा से
रात-दिन कमाकर भी

विवश है काटने को कभी-कभी

फाके की राते।"[1]

कवि ने यहाँ दलितों की निर्धनता, आर्थिक तंगी, परेशानी, अभावों से भरी जिंदगी पर प्रकाश डाला है। दलित व्यक्ति अपनी पेट की भूख को मिटाने के लिए रात-दिन कष्ट करता है, मेहनत मजदूरी करता है परंतु इतनी मेहनत करने के बावजूद, वह अवसर दिन भर काम करने पर भी फाके की राते बिताना है यह इसकी विवशता है। वह मजबूर है कि फिर भी उसे भूखा सोना पड़ता है। 'गुंगा नहीं था मैं' इस कविता संग्रह के 'दमन की दहलीज पर' इस कविता में भूख की समस्या का चित्रण कवि ने इस प्रकार किया है।

"नहीं खोदने दी गयी है

अपने खेतो में उन्हें घास

अन्न और चारे के अभाव में

मनुष्य और मवेशी।"[2]

कवि कहता है कि सवर्णो ने दलितों पर कितने अत्याचार किए है इसका बयान यहाँ किया है। दलितों ने बगावत करने पर कि उन्हें उनके अधिकार मिलने चाहिए। इसके बदले में सवर्णो ने उन्हें अपने खेतों में घास तक उन्हें नहीं खोदनी दी है। अन्य तथा चारे के अभाव में मनुष्य तथा प्राणियों को भूखे-प्यासे तड़प-तड़पकर मरना पड़ा है, यही दलित जीवन विड़ंबना है।

'अम्बेड़कर की संतान' कविता में जयप्रकाश कर्दम भूख को इस प्रकार स्पष्ट करता है।

"निरूपाय-सा पड़ा - 'हरखुवा'

जानता है कि वह

---

1. डॉ.जयप्रकाश कर्दम - गूंगा नहीं था मैं - पृ. 24
2. वही - पृ. 34

अक्षम अंपग नहीं है वह भूख
और बेवसी का शिकार है।"[1]

कवि का कहना है कि आज गाँव देहात में अनेक दलित सवर्णो की अन्यायी व्यवस्था एवं मानसिकता के शिकार बन चुके है। दलित पात्र हरखुवा विवश है लाचार है, वह जानता है कि वह अपंग एवं अक्षम नहीं है पर भूख ने उसके हाथ-पाँव बाँध दिए है भूख की वजह से ही वह लाचार एवं बेबस है। सदियों से दलितों की यह एक प्रमुख समस्या रही है। यहाँ दलित समाज का यथार्थ चित्रण जयप्रकाश कर्दम ने किया है।

जैसे -

"वैभव के अम्ब में
रोज
चमकता, दमकता है
अभाव के थाली में
कब उतरेगा-
रोटी का सूरज।"[2]

कवि ने यहाँ दलितों की दयनीय अवस्था का चित्रण किया है। जिनके पास सबकुछ है, जो वैभवसंपन्न है उनके पास ही रोटी का सूरज चमकता है। लेकिन गरीबों की थाली में अभावों के कारण रोटी का सूरज चमकता नहीं है। इस रोटी रूपी सूरज का मुख देखने के लिए उन्हें जी-तोड़ मेहनत करनी पड़ती है फिर भी यह सूरज दलितों की उपेक्षा करता है।

---

1. डॉ.जयप्रकाश कर्दम - गूंगा नहीं था मैं - पृ. 49
2. वही - पृ. 70

'भूख' कविता में जयप्रकाश कर्दम ने 'भूख की समस्या' को इस प्रकार दर्शाया है -

"उसकी
भूखी, उदास आंखो ने
जिस और भी देखा है
हर चेहरे पर
काम और कुटिलता की
रेखा है।"[1]

कवि ने यहाँ सवर्णों की वर्चस्ववादी सामंती प्रवृत्ती का दर्शन कराया है। आज दलितों की ओर देखनेवाली नजरें उनपर घात लगाए बैठी है, दलितों की भूखी, उदास आँखो को काम और कुटिलता की रेखा दिखती है। जहाँ भी वे देखते है इसप्रकार कुटिलता सवर्णों के अंग-अंग में रच-बस गयी है।

'तिनका तिनका आग' इस कविता संग्रह के 'विहान' इस कविता में भूख का चित्रण कवि इस प्रकार करता है -

"उसके चेहरे पर उदासी
आंखो मे दीनता
हृदय मे म्लान है
वह भूख से परेशान है।"[2]

कवि का कहना है कि दलितों के चेहरों पर सदियों से प्रताड़िन रहने के कारण एक उदासी एवं बेबसी है, दीनता है। उनके हृदय कभी उमंग से आप्लावित नहीं होते, क्योंकि वह भूख से म्लान है, परेशान है। आजादी के पश्चात् भी दलितों को भूख जैसी प्राथमिक आवश्यकता की पूर्ति से भी वंचित रहना पड़ता है।

---

1. डॉ.जयप्रकाश कर्दम - गूंगा नहीं था मैं - पृ. 71
2. डॉ.जयप्रकाश कर्दम - तिनका-तिनका आग - पृ. 40

'जाति का व्याकरण' इस कविता में भूख की समस्या का चित्रण जयप्रकाश कर्दम इस प्रकार करते है -

"मेरे बारे में तुम्हारी अनुभूति
काश, खाना पड़ा होता तुम्हे
पेट भरने के लिए
मरे हुए पशु का मांस।"[1]

कवि कहता है, दलितों की व्यथा समझने के लिए उनके जैसा जीवन जीना पडेगा तभी उसकी अनुभूति हो सकती है। पेट की आग को बुझाने के लिए मरे हुए पशु का मांस भोजन के रूप में खाना पडा होता, तभी जीवन की सच्चाई सवर्णो को पता चलती। इस तरह कविने यहाँ दलित जीवन में स्थित भूख की समस्या का चित्रण किया है।

'भूख' कविता में जयप्रकाश कर्दम भूख की समस्या का चित्रण इस प्रकार करते है -

"एक अरसे से
वह मेरे पीछे पड़ी है
मेरे चाह के विरूद्ध
मेरी इच्छा के विरूद्ध
कितनी ही बार
मैं उसको समझा चुका
तुम मेरे पीछे मत पड़ो
यहां तुम्हे
कुछ मिलनेवाला नहीं।"[2]

---

1. डॉ.जयप्रकाश कर्दम - तिनका-तिनका आग - पृ. 25
2. वही - पृ. 69

प्रस्तुत कविता 'भूख' में कविने भूख की समस्या पर प्रकाश डाला है। दलितों के पीछे ही भूख पड़ जाती है। अपनी इच्छा के विरूद्ध वह आती है। बार-बार अपने आने का एहसास करानेवाली भूख को कवि बार-बार समझाते हैं कि मेरे पीछे मत आओ, तुम्हे यहाँ कुछ मिलनेवाला नहीं है। दलितों के जीवन में भूख हमेशा उनके साथ होती है क्योंकि उन्हे कभी भी पेट भर भोजन नहीं मिलता।

जयप्रकाश कर्दम अपनी 'भूख' कविता में कहते है -

" मैं उसे अनुभव करता हूँ
उपेक्षा और अकेलेपन के
उन क्षणों में
मैं सोचने को विवश होता हूँ
भेदभाव की इस दुनिया में
कम-से-कम भूख तो हैं
जो मुझे अपना समझती है।"[1]

कवि भूख की समस्या को व्यक्त करते हुए लिखते है कि कवि उसे तब तब अनुभव करते हैं जब उनके जीवन में उपेक्षा एवं अकेलापन होता है। ऐसे क्षणों में कवि सोचते हैं कि दलितों के अभावग्रस्त भूखे प्यासे जीवन में भेदभाव करनेवाले मनुष्य जीवन में एक भूख ही है, जो कवि को अपना समझकर उनका सहयोग देती है। क्योंकि भूख मिट गयी होती तो चली जाती। यहाँ भूख मिटने का सवाल ही पैदा नहीं होता। इस तरह कविने यहाँ भूख की समस्या का यथार्थ वर्णन किया है।

4.2.13 आर्थिक समस्या :

मनुष्य के जीवन में 'अर्थ ' को महत्त्वपूर्ण स्थान है। लेकिन दलित समाज

---

1. डॉ.जयप्रकाश कर्दम - तिनका-तिनका आग - पृ. 72

को पूँजीपतिओं ने आर्थिक दृष्टि से हीन बनाया। उच्च-वर्ग के लोग दलितों से काम करवाते है लेकिन इन्हें मजदूरी अत्यल्प प्रमाण में देते है। इसी आर्थिकता के कारण दलित वर्ग मूलभूत आवश्यकताओं से वंचित रहा है। आर्थिकता ही विकास की नींव है लेकिन समाज में पूँजीपतिओं ने इस नींव को हिलाकर दलितों को कमजोर बनाया है। डॉ.सुरेंद्रनाथ तिवारी कहते है - "आज के जीवन में अर्थ ही सामाजिक विषमता का मूल कारण है और अर्थ पर ही आधारित आधुनिक सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत नए वर्गों का प्रार्दुभाव भी हुआ है।"[1] इससे स्पष्ट है कि पूँजीपति आर्थिकता का सहारा लेकर दलितों का शोषण कर रहे है। दलित वर्ग पूँजीपतिओं की आर्थिकता की चक्की में पिस रहा है। दलित वर्ग के पास अर्थ का अभाव होने के कारण वे भौतिक सुख-सुविधाओं से वंचित रहते है। सामाजिक विषमता के कारण दलितों की आर्थिक स्थिति बिकट बनी हुई है। दलित वर्ग जादातर परंपरागत व्यवसाय करते है और उसका मूल्य साल के अंत में मिलता है। देहातों में लेहनादार प्रथा के अनुसार बढ़ई, नाई, धोबी, चमार आदि जिन्हें काम के बदले उपज का अंश तथा मांगलिक अवसरों पर इनाम देते है। परिणामत: दलितों की आर्थिक स्थिति कमजोर नजर आती है। जयप्रकाश कर्दम के कविता-संग्रहों में आर्थिक समस्याओं का चित्रण मिलता है।

'आज का रैदास' इस कविता में जयप्रकाश कर्दम ने दलितों की आर्थिक स्थिति का चित्रण इस प्रकार किया है -

"सड़क के किनारे
जूती गांठता है रैदास
पास में बैठा है उसका
आठ वर्ष का बेटा पूसन

1. डॉ. सुरेंद्रनाथ तिवारी - प्रेमचंद और शरतचंद्र के उपन्यास में मनुष्य का बिंब - पृ.29

फटे-पुराने कपड़ो में लिपटा
उसके कुल का भूषण।"[1]

कवि कहता है कि दो वक्त की रोटी कमाने के लिए कितने हीन काम करने पड़ते है। सड़क के किनारे रैदास को जूती गांठने के लिए बैठना पड़ता है ताकि वे भूख से निजात पायें। उसके साथ ही उसके कुल का भूषण उसका बेटा पूसन भी है जिसके शरीर पर फटे पुराने कपड़े है। जो आर्थिक दुर्बल होने के कारण स्कूल नहीं जा पाता तथा अच्छे कपडे भी नहीं पहन सकता।

'गूंगा नहीं था 'मैं' इस कविता संग्रह के आज का रैदास इस कविता में आर्थिक समस्या का चित्रण इस प्रकार किया है -

"यूं उसका नाम
सरकारी स्कूल में दर्ज है
लेकिन, वहां का भी
क्या कम खर्च है
कभी किताब कभी कापी और
कभी कपड़ो के अभाव में
नहीं जा पाता है पूसन प्राय: स्कूल।"[2]

कवि ने बयान किया है कि दलित वर्ग आर्थिक समस्या के कारण शिक्षा जैसी प्राथमिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए दलितों कों वंचित रहना पड़ता है।दलित अपने बच्चों के लिए सरकारी स्कूल का खर्च तक नहीं उठा पाते। रैदास का बेटा पूसन कभी किताब-कापी तो कभी कपड़ो के अभाव में स्कूल नहीं जा पाता यहीं दलित जीवन की विडंबना है।

---

1. डॉ. जयप्रकाश कर्दम - गूंगा नहीं था मैं - पृ. 52
2. वही - पृ. 52

'लालटेन' कविता में कर्दम ने दलितों के आर्थिक समस्या का चित्रण इस प्रकार किया है -

"दिवार में गड़ी हुई
बतासे की कील पर
यूं गाव के दूसरों घरो में
बिजली थी, लेकिन
हमारे घर में सिर्फ यही लालटेन थी।"[1]

कवि ने यहाँ कहा है कि दलितों के घरों में अंधेरा दूर करने के लिए बिजली के बजाए लालटेन का इस्तेमाल होता था। गाँव के सवर्णों के घरों में संपन्नता के कारण बिजली थी लेकिन आर्थिक अभाव के कारण दलितों के घर में लालटेन के लिए भी तेल जुटाना अत्यंत कठिन था। संपन्नता एवं विपन्नता की यहाँ झलक स्पष्ट मिलती है। 'लालटेन' कविता में जयप्रकाश कर्दम ने इस समस्या पर प्रकाश डाला है -

"और हंडिया-रोटी से निफराम होकर
इसी लालटेन की रोशनी में बैठकर माँ
अपने और हम बहन-भाइयों
फटे-उधड़े कपड़ो को
हाथ से सिलती।"[2]

कवि ने कहा है कि किस प्रकार दलित स्त्री का जीवन कंष्ट में बितता है। दिन भर कड़ी मेहनत करने पर ही दो वक्त की रोटी जैसे तैसे मिलती थी। तो सारे कामकाज निपटकर कवि की माँ लालटेन के प्रकाश में फटे-पुराने कपड़ों को सीलती थी। क्योंकि दर्जी से सिलवाने के पैसे तक उनके पास नहीं थे। आर्थिक विपन्नता के दर्शन यहाँ होते हैं।

---

1. डॉ. जयप्रकाश कर्दम - गूंगा नहीं था मैं - पृ. 55
2. वही - पृ. 56

'गूंगा नहीं था मैं' इस कविता संग्रह के 'लालटेन' कविता में आर्थिक समस्या का चित्रण कर्दम ने इस प्रकार किया है -

"यूं आर्थिक तंगी के कारण
छुकी-भुनी तो क्या
कभी-कभी हफ्तों तक
बिना छुनी-भुनी सब्जी भी
हमारे घर नहीं बनती थी
प्राय: नमक के चावल
या उबले हुए आलू
नमक के साथ
हम लोग खाते थे
हमसे जो बचता
मां वह खाती थी।"[1]

यहाँ कवि ने दलित परिवार के अभावग्रस्त जीवन पर प्रकाश डाला है। दलित परिवारों जी-तोड़ मेहनत-मजदूरी करने के बाद भी आर्थिक अभाव के कारण हफ्तों तक सब्जी भी नहीं बनती थी। छूकी-भूनी तो बहुत दूर की बात थी। उन्हें अक्सर नमक के साथ चावल या उबले हुए आलू ही खाने पड़ते थे और बच्चों के खाने के बाद जो कुछ बचा-खुचा रहता है वह माँ खा लेती थी। अर्थात कहीं कष्टों के बावजूद दो वक्त की रोटी पाना दलित परिवारों के लिए अत्यंत कष्टकर होता है।

'ओ नए साल' कविता में कर्दम ने दलितों के आर्थिकता के दर्शन इस प्रकार करवाए है -

---

1. डॉ. जयप्रकाश कर्दम - गूंगा नहीं था मैं - पृ. 57

"पार साल
बिसना की जवान बीवी
इलाज के अभाव में
छोटी सी बीमारी-से मर गयी थी
दारिद्रय की देवी
अभाव के कुएं को
विषादो से भर गयी।"[1]

कवि ने यहाँ दलित जीवन की विड़बना को मुखर किया है। पिछले साल बीमारी में इलाज के लिए पैसों के अभाव में बिसना की जवान बीवी मर गयी थी। एक तो वैसी ही बिसना का परिवार मुसीबत में था। अब बीवी की मौत ने उसकी कमर तोड़ दी है। फिर नये सिरे से दारिद्रय की देवी पहले के अभावों से भरपूर जीवन को और विषादों से भर जाती है। इस तरह कवि ने दलित जीवन में आर्थिक समस्या को दर्शाया है।

निष्कर्ष :

'जयप्रकाश कर्दम के काव्य में चित्रित दलित जीवन की समस्याएँ' इस अध्याय में दलित वर्ग जिन समस्याओं से जूझ रहा है, उस समस्याओं पर विस्तार के सोचा है। इस अध्याय में जातीयता की समस्या, भूख की समस्या, आर्थिक समस्या, भ्रष्टाचार की समस्या आदि समस्याओं पर प्रकाश डाला है। भारतीय समाज व्यवस्था में आर्थिक स्थिति पर स्थान मिलता है। जिसके पास पैसें नहीं होते है उसे समाज में कोई किंमत नहीं होती। अशिक्षा, अंधविश्वास, भ्रष्टाचार, शोषण आदि के कारण दलित लोग आर्थिक स्तर पर दुर्बल बनते नजर आते है।

---

1. डॉ. जयप्रकाश कर्दम - गूंगा नहीं था मैं - पृ. 62

समाज में जातीयता एक प्रमुख समस्या के रूप में सामने आती है। उच्चवर्ग के लोग दलित वर्ग के लोगों का स्पर्श भी अपवित्र मानते है। दलित वर्ग को जातीयता का सामना हमेशा से करना पड़ता है। स्कूल में गुरू दलित छात्रों को पढ़ाता है, लेकिन उनका स्पर्श वर्ज्य मानते हैं। इसका चित्रण 'वर्णवाद का पहाड़ा' इस कविता में मिलता है। हिंदू धर्म में जाति को महत्त्व होने के कारण इसमें जातीयता नजर आती है। हिंदू धर्म में पशू से बदतर जीवन जीनेवाले दलित लोग मानव बनकर जीने का अधिकार माँगते हुए नजर आते है।

स्वतंत्रता के पूर्व से दलितों का शोषण हो रहा है। समाज का उच्चवर्ग दलित वर्ग का शोषण करता नजर आता है। साहूकार द्वारा शोषण दलितों का हमेशा से होता आया है। साहूकार छोटे-से कर्ज के बदले घर-जमीन तक अपने नाम लिखवा लेता है, उनका कोरे कागज पर अंगूठा लगवाकर उनका शोषण करता नजर आता है। यौन शोषण की समस्या समाज में आज भी दिखाई देती है। नारी पुरूष की वासना की शिकार बनती नारी एक भोग्या के रूप में प्रस्तुत हुई है। समाज में शोषण का सर्वाधिक शिकार नारी ही है।

भ्रष्टाचार की समस्या में न्यायालय, पुलिस-थाना, रिश्वत लेना आदि पर प्रकाश डाला है। समाज में अगर कोई दलित आंदोलन करे तो उसे झूठे केस में फंसाया जाता है। अगर कोई उच्चवर्ग के लोग दलित वर्ग के लोगो पर अत्याचार करे तो अदालत से वे बाइज्जत छूट जाते है। इससे स्पष्ट है कि भ्रष्टाचार के कारण दलित वर्ग का शोषण हो रहा है, जिसमें दलित वर्ग बूरी तरह से पिसा जा रहा है।

दलित समस्याओं का एक और अंग है अंधविश्वास। धार्मिक व्यक्ति दलित समाज को अंधविश्वास के जाल में ओढ़ते है, तथा उनके पैसे निकालते है उनके अज्ञान का फायदा उठाकर उन्हें आर्थिक स्तर पर दुर्बल बनाते है। ग्रामीण भागों के साथ-साथ शहरी भागो में भी अंधविश्वास की समस्या नजर आती है।